जन्म पत्रिका

Sample Horoscope

जन्म पत्रिका एक सर्वप्रिय मॉडल है। इसमें ज्योतिषीय गणनाएं, फलादेश व उपाय जैसे रत्न, रुद्राक्ष, मंत्र एवं दान आदि सहित 100 पेज से अधिक की रिपोर्ट तैयार होती है। इसमें गोचर सहित 5 साल का फलादेश व 5 साल का दशाफल दिया गया है। साथ ही इसमें अंक ज्योतिष फलादेश भी दिया गया है। यह किसी जातक के बारे में जानने के लिए अद्वितीय रिपोर्ट है।

जन्म पत्रिका में फलादेश के साथ बृहत ज्योतिषीय गणनाएं दी गई हैं जो कि किसी ज्योतिषी को या स्वयं को अपना भूतकाल समझने व भविष्यकाल का फलादेश जानने के लिए उत्तम हैं।

SrNo: 101-111-105-1030 / 281 Date: 18/04/2017

Sample Horoscope

02 Mar 1986

07:50 AM

Delhi

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। लियो स्टार द्वारा बनाए जाने वाले जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

फ्यूचर पॉइंट कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए फ्यूचर पॉइंट उत्तरदायी नहीं है।

Sample Horoscope

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**02/03/1986**
दिन	रविवार
जन्म समय	**07:50:00 घंटे**
इष्ट	02:40:02 घटी
स्थान	**Delhi**
देश	India

अक्षांश	28:39:00 उत्तर
रेखांश	77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	07:28:52 घंटे
वेलान्तर	-00:12:16 घंटे
साम्पातिक काल	18:07:13 घंटे
सूर्योदय	06:45:59 घंटे
सूर्यास्त	18:21:09 घंटे
दिनमान	11:35:11 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	वसन्त
सूर्य के अंश	17:32:34 कुम्भ
लग्न के अंश	08:54:43 मीन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मीन - गुरु
राशि-स्वामी	**तुला - शुक्र**
नक्षत्र-चरण	**विशाखा - 3**
नक्षत्र स्वामी	गुरु
योग	व्याघात
करण	वणिज
गण	राक्षस
योनि	व्याघ्र
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	सर्प
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	ते-तेजवन्त
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मीन

पंचांग

दादा का नाम :
पिता का नाम :
माता का नाम :
जाति :
गोत्र :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1907	फाल्गुन	11
पंजाबी	संवत : 2042	फाल्गुन	19
बंगाली	सन् : 1392	फाल्गुन	18
तमिल	संवत : 2042	मासी	18
केरल	कोल्लम : 1161	कुंभम	18
नेपाली	संवत : 2042	फाल्गुन	19
चैत्रादि	संवत : 2042	फाल्गुन	कृष्ण 6
कार्तिकादि	संवत : 2042	माघ	कृष्ण 6

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि	: 6
तिथि समाप्ति काल	: 08:55:19
जन्म तिथि	: 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र	: विशाखा
नक्षत्र समाप्ति काल	: 15:15:51 घंटे
जन्म योग	: विशाखा
सूर्योदय कालीन योग	: व्याघात
योग समाप्ति काल	: 18:39:38 घंटे
जन्म योग	: व्याघात
सूर्योदय कालीन करण	: वणिज
करण समाप्ति काल	: 08:55:19 घंटे
जन्म करण	: वणिज
भयात	: 37:50:05
भभोग	: 56:24:42
भोग्य दशा काल	: गुरु 5 वर्ष 3 मा 5 दि

घात चक्र

मास	: माघ
तिथि	: 4-9-14
दिन	: गुरुवार
नक्षत्र	: शतभिषा
योग	: शुक्ल
करण	: तैतिल
प्रहर	: 4
वर्ग	: गरुड़
लग्न	: कन्या
सूर्य	: कन्या
चन्द्र	: धनु
मंगल	: तुला
बुध	: कर्क
गुरु	: वृश्चिक
शुक्र	: धनु
शनि	: सिंह
राहु	: मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

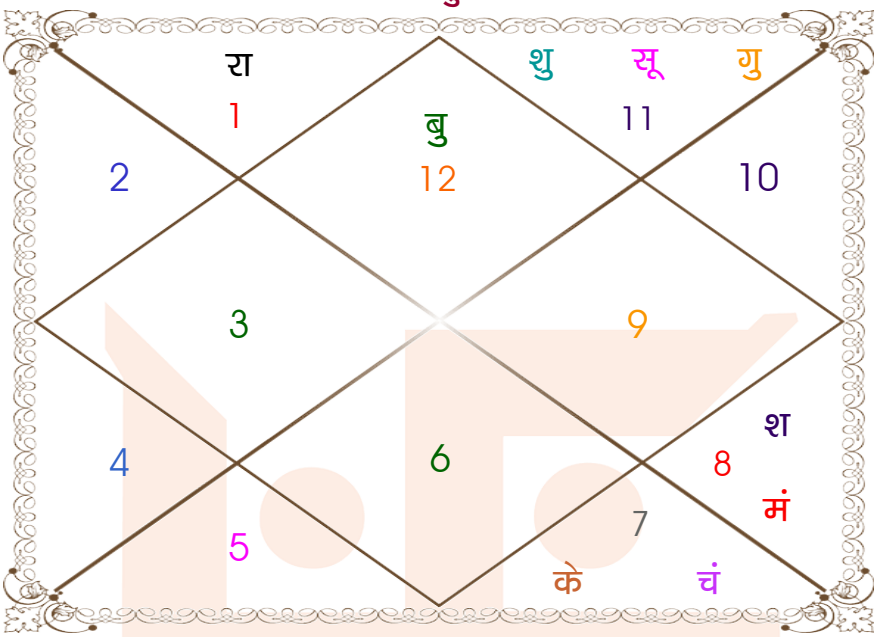

चन्द्र कुंडली

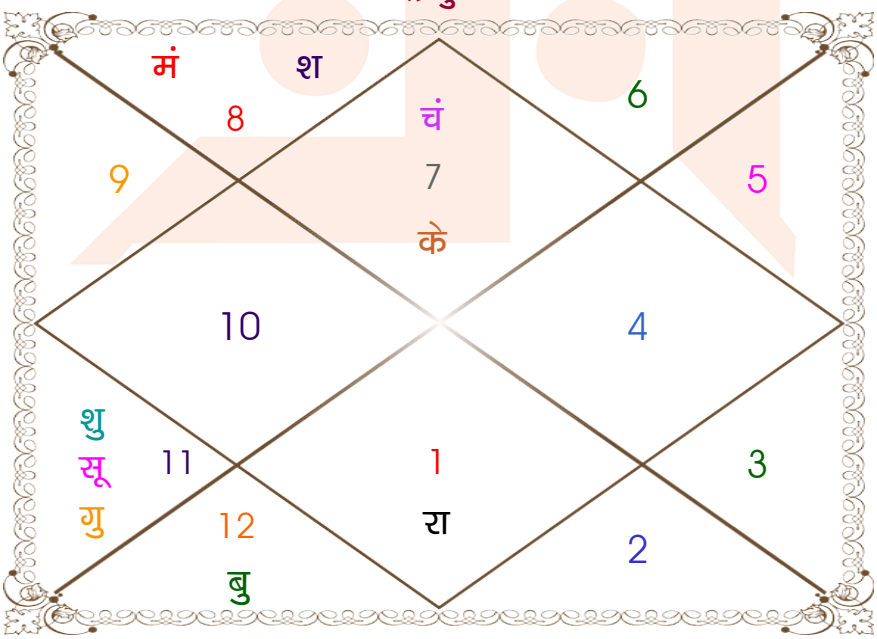

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

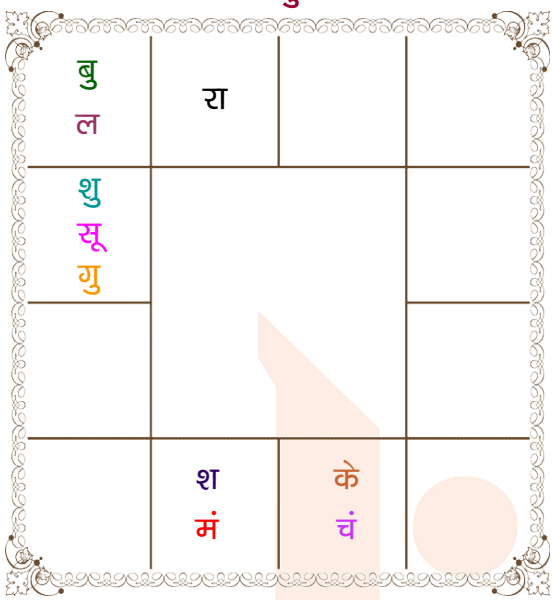

लग्न कुंडली

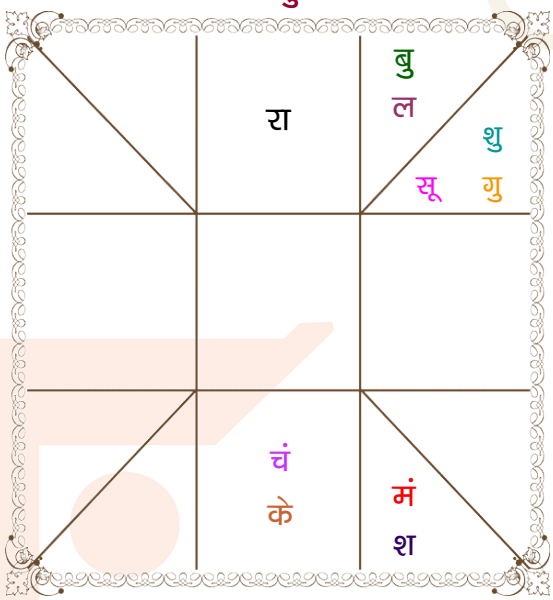

विंशोत्तरी
गुरु 5वर्ष 3मा 5दि
गुरु

02/03/1986
07/06/2095

गुरु	07/06/1991
शनि	07/06/2010
बुध	07/06/2027
केतु	07/06/2034
शुक्र	07/06/2054
सूर्य	06/06/2060
चन्द्र	07/06/2070
मंगल	07/06/2077
राहु	07/06/2095

योगिनी
धान्या 0वर्ष 11मा 25दि
मंगला

25/02/2017
25/02/2018

मंगला	07/03/2017
पिंगला	27/03/2017
धान्या	27/04/2017
भ्रामरी	06/06/2017
भद्रिका	27/07/2017
उल्का	26/09/2017
सिद्धा	06/12/2017
संकटा	25/02/2018

गणना

गणनाएं किसी भी जन्मपत्री का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग है।

गणनाएं किसी भी जन्मपत्री का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग होती हैं। इन गणनाओं में सभी आवश्यक और महत्वपूर्ण ज्योतिषीय गणनाएं जैसे ग्रहों के अंश, महत्वपूर्ण कुण्डलियां, ग्राफ और दशा गणना आदि शामिल हैं। प्रत्येक गणना के अपने सिद्धान्त व महत्व हैं। इन्हीं सटीक गणनाओं की सहायता से ही ज्योतिषी जातक के भूत, भविष्य व वर्तमान के बारे में सही अनुमान लगा पाता है।

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	08:54:43	515:16:13	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	शुक्र	---
सूर्य			कुंभ	17:32:34	01:00:12	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	सूर्य	शत्रु राशि
चंद्र			तुला	28:56:43	14:10:40	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	सूर्य	सम राशि
मंगल			वृश्चि	22:23:13	00:33:35	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	चंद्र	स्वराशि
बुध			मीन	05:28:27	00:47:56	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	नीच राशि
गुरु		अ	कुंभ	08:35:54	00:14:20	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	राहु	सम राशि
शुक्र			कुंभ	27:33:03	01:14:52	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	मित्र राशि
शनि			वृश्चि	15:47:25	00:01:45	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	गुरु	शत्रु राशि
राहु			मेष	07:27:15	00:01:15	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	राहु	शत्रु राशि
केतु			तुला	07:27:15	00:01:15	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	राहु	सम राशि
हर्ष			वृश्चि	28:25:38	00:01:20	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	---
नेप			धनु	11:46:57	00:01:11	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	---
प्लूटो	व		तुला	13:34:09	00:00:44	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	बुध	---
दशम भाव			धनु	07:59:31	--	मूल	--	19	गुरु	केतु	गुरु	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:39:41

लग्न-चलित

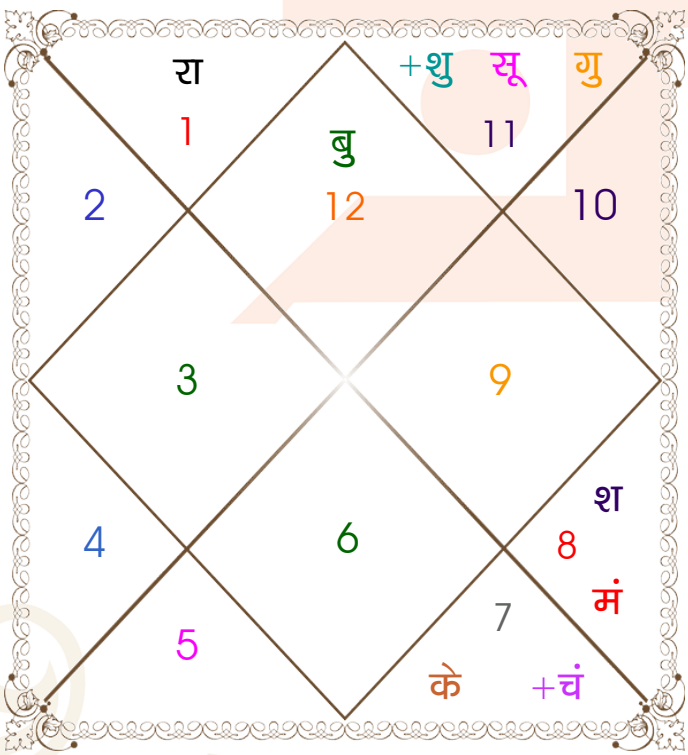

चन्द्र कुंडली

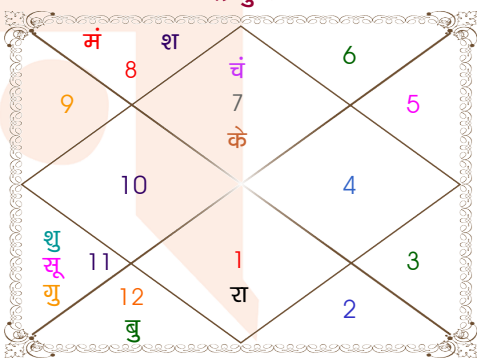

नवमांश कुंडली

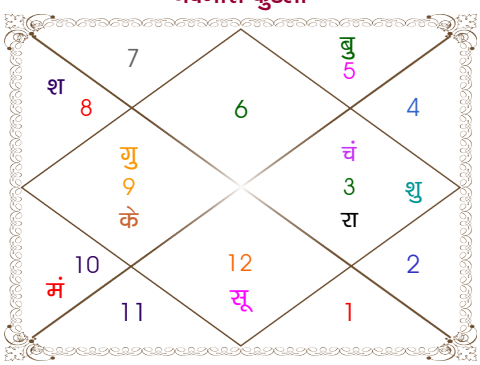

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कुम्भ	23:45:31	मीन	08:54:43
2	मीन	23:45:31	मेष	08:36:19
3	मेष	23:27:07	वृष	08:17:55
4	वृष	23:08:43	मिथुन	07:59:31
5	मिथुन	23:08:43	कर्क	08:17:55
6	कर्क	23:27:07	सिंह	08:36:19
7	सिंह	23:45:31	कन्या	08:54:43
8	कन्या	23:45:31	तुला	08:36:19
9	तुला	23:27:07	वृश्चिक	08:17:55
10	वृश्चिक	23:08:43	धनु	07:59:31
11	धनु	23:08:43	मकर	08:17:55
12	मकर	23:27:07	कुम्भ	08:36:19

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	08:54:43
2	मेष	16:02:55
3	वृष	14:05:20
4	मिथुन	07:59:31
5	कर्क	02:07:21
6	सिंह	00:52:41
7	कन्या	08:54:43
8	तुला	16:02:55
9	वृश्चिक	14:05:20
10	धनु	07:59:31
11	मकर	02:07:21
12	कुम्भ	00:52:41

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति

चलित कुंडली

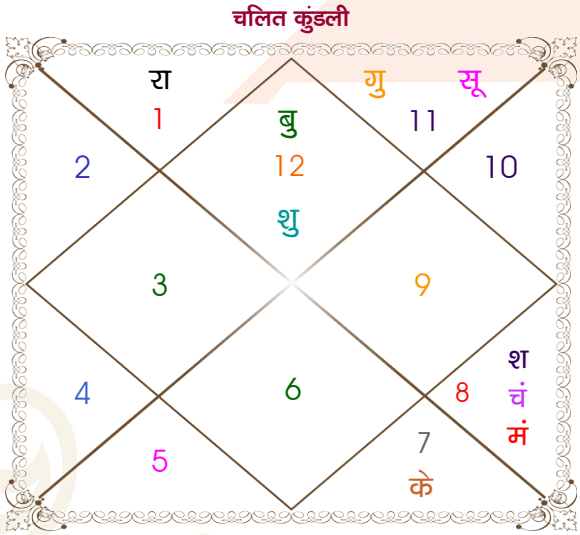

भाव कुंडली

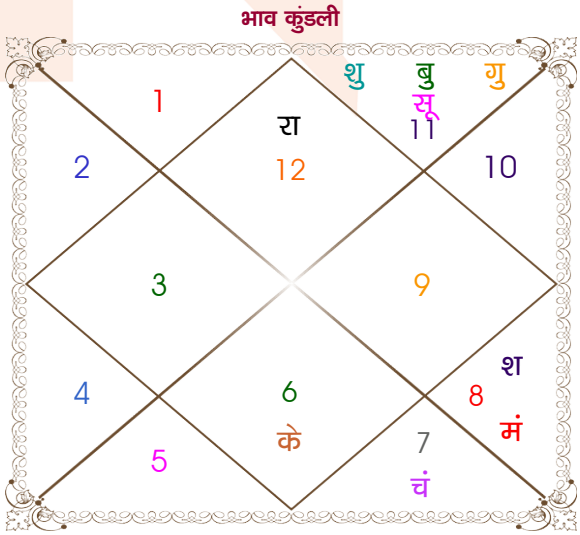

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	मातृ	पितृ	युवा	खल	आगमन	7.09	19 %
चंद्र	आत्मा	मातृ	मृत	निपीदित	आगमन	0.10	47 %
मंगल	भ्रातृ	भ्रातृ	कुमार	स्वस्थ	निद्रा	4.77	15 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	मृत	भीत	नृत्यलिप्सा	0.32	49 %
गुरु	ज्ञाति	धन	कुमार	विकल	आगमन	0.00	21 %
शुक्र	अमात्य	कलत्र	मृत	मुदित	निद्रा	8.92	67 %
शनि	पुत्र	आयु	युवा	खल	शयन	1.71	39 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	खल	आगमन	0.00	7 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	निपीदित	नेत्रपाणि	0.00	7 %
कुल						22.91	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति

चलित कुंडली

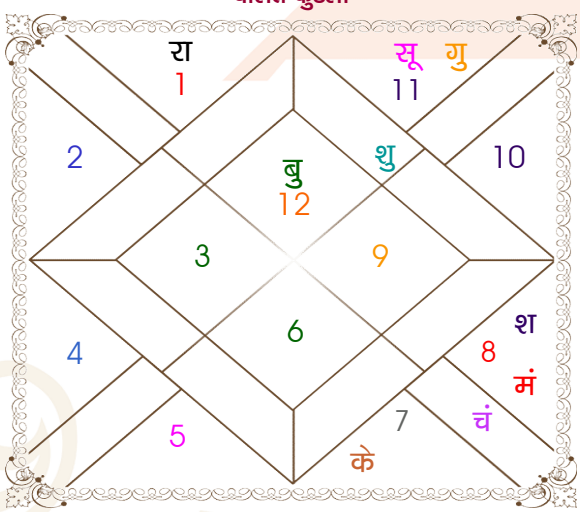

लग्न-चलित

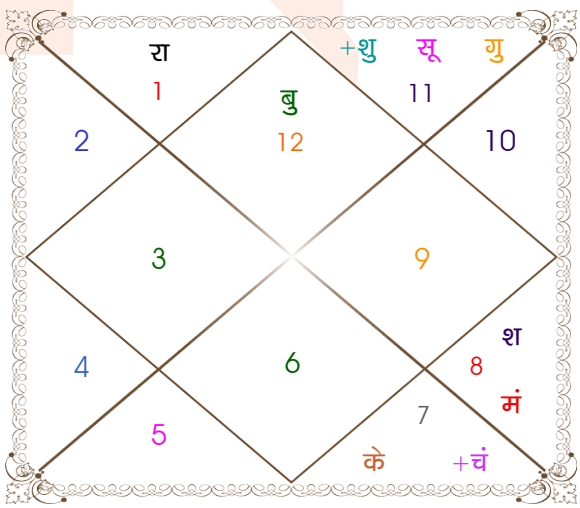

सुदर्शन चक्र

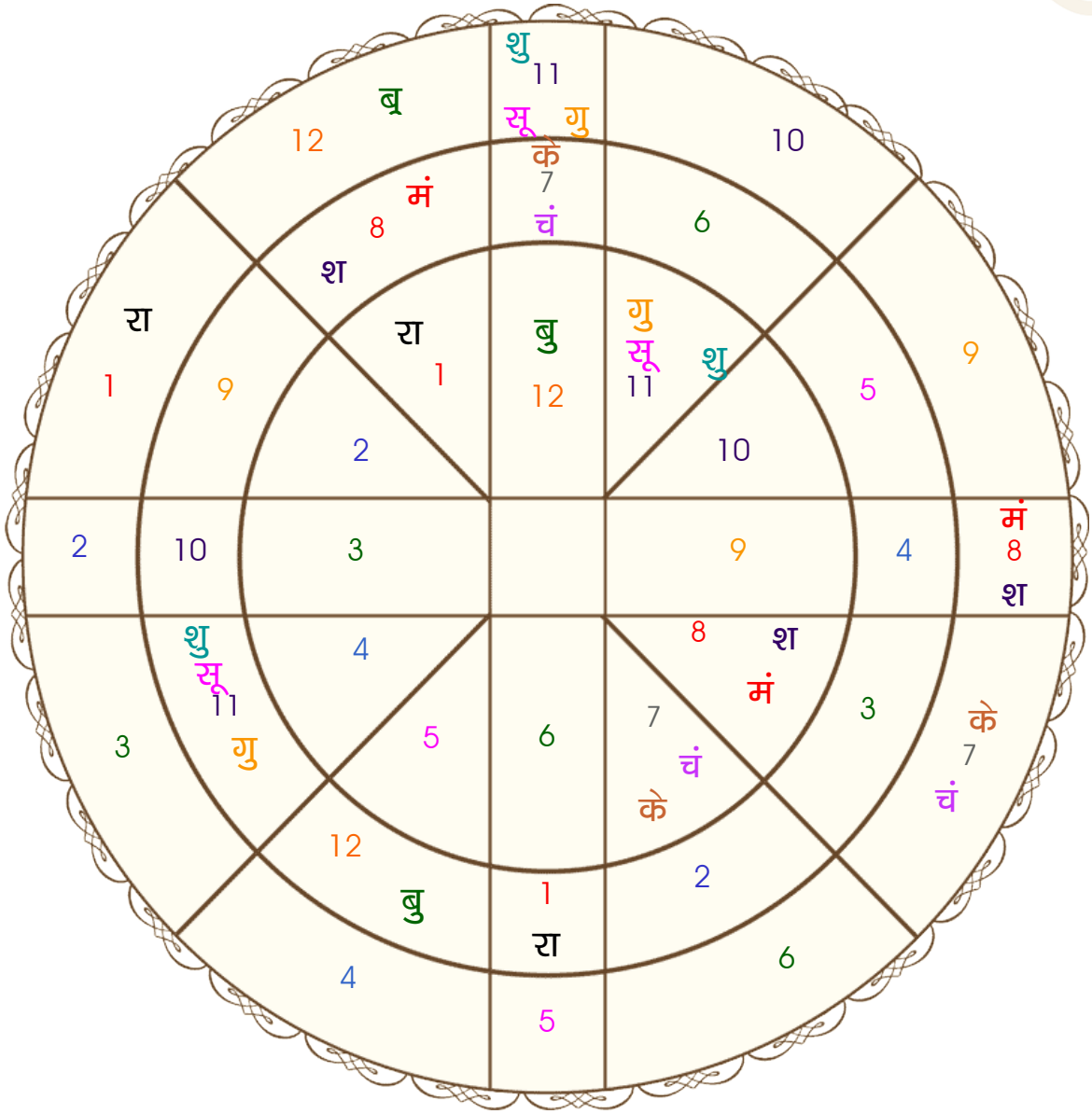

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

भोग्य दशा काल : गुरु 5 वर्ष 1 मास 22 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कुंभ	17:38:37	शनि	राहु	सूर्य	राहु
चंद्र		तुला	29:02:46	शुक्र	गुरु	सूर्य	गुरु
मंगल		वृश्चि	22:29:16	मंगल	बुध	चंद्र	राहु
बुध		मीन	05:34:30	गुरु	शनि	बुध	बुध
गुरु		कुंभ	08:41:57	शनि	राहु	गुरु	गुरु
शुक्र		कुंभ	27:39:06	शनि	गुरु	शुक्र	राहु
शनि		वृश्चि	15:53:28	मंगल	शनि	गुरु	शुक्र
राहु		मेष	07:33:18	मंगल	केतु	राहु	मंगल
केतु		तुला	07:33:18	शुक्र	राहु	राहु	बुध
हर्ष		वृश्चि	28:31:41	मंगल	बुध	शनि	केतु
नेप		धनु	11:53:00	गुरु	केतु	बुध	शुक्र
प्लूटो	व	तुला	13:40:11	शुक्र	राहु	बुध	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मीन	09:00:46	गुरु	शनि	शुक्र	राहु
2	मेष	16:08:58	मंगल	शुक्र	सूर्य	शुक्र
3	वृष	14:11:23	शुक्र	चंद्र	गुरु	शनि
4	मिथु	08:05:34	बुध	राहु	राहु	शुक्र
5	कर्क	02:13:23	चंद्र	गुरु	राहु	बुध
6	सिंह	00:58:44	सूर्य	केतु	शुक्र	शुक्र
7	कन्या	09:00:46	बुध	सूर्य	शुक्र	गुरु
8	तुला	16:08:58	शुक्र	राहु	शुक्र	राहु
9	वृश्चि	14:11:23	मंगल	शनि	राहु	शुक्र
10	धनु	08:05:34	गुरु	केतु	गुरु	बुध
11	मक	02:13:23	शनि	सूर्य	गुरु	शुक्र
12	कुंभ	00:58:44	शनि	मंगल	बुध	मंगल

के.पी. अयनांश : 23:33:38

फॉरच्युना : वृश्चिक 20:24:55

लग्न कुंडली

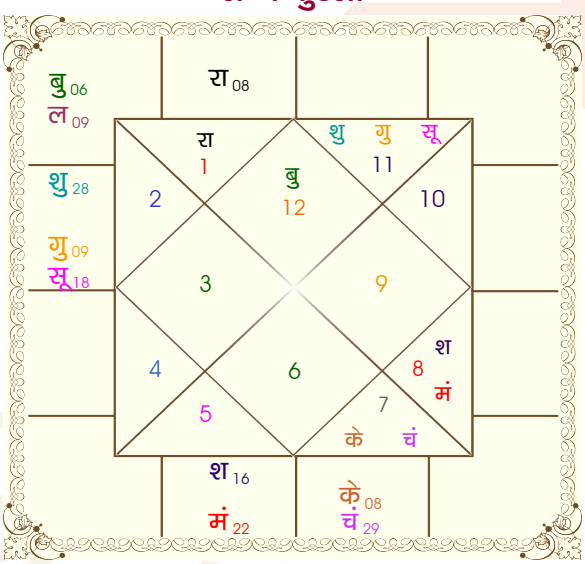

भाव कुंडली

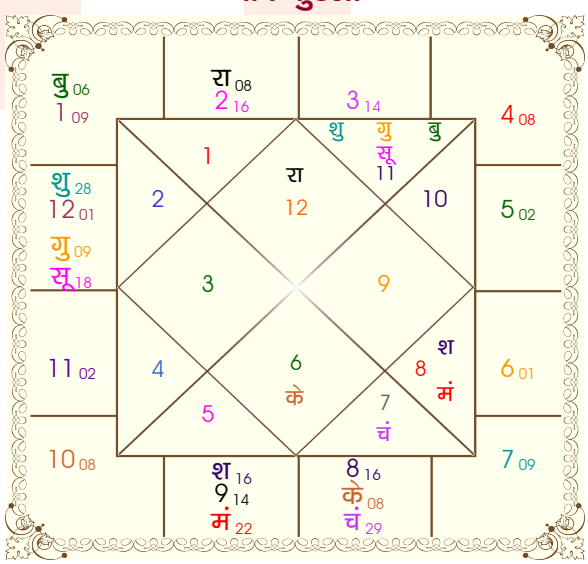

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य, चंद्र- गुरु+ शुक्र- राहु, केतु,
2	मंगल-
3	शुक्र-
4	मंगल- बुध-
5	चंद्र-
6	सूर्य-
7	मंगल- बुध- राहु, केतु,
8	चंद्र, शुक्र-
9	मंगल, बुध, शनि+
10	चंद्र- गुरु- शुक्र-
11	बुध- शनि,
12	सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध+ गुरु, शुक्र+ शनि,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1, 6- 12,
चंद्र	1- 5- 8, 10- 12,
मंगल	2- 4- 7- 9, 12,
बुध	4- 7- 9, 11- 12+
गुरु	1+ 10- 12,
शुक्र	1- 3- 8- 10- 12+
शनि	9+ 11, 12,
राहु	1, 7,
केतु	1, 7,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शनि
लग्न राशि स्वामी	गुरु
राशि नक्षत्र स्वामी	गुरु
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	सूर्य
लग्न अन्तर स्वामी	शुक्र
राशि अन्तर स्वामी	सूर्य

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

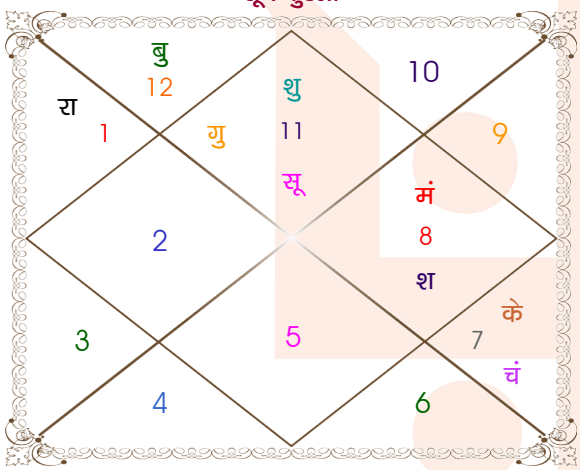

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

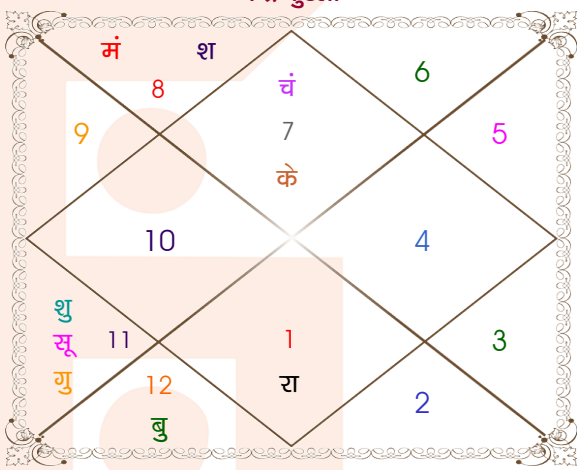

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

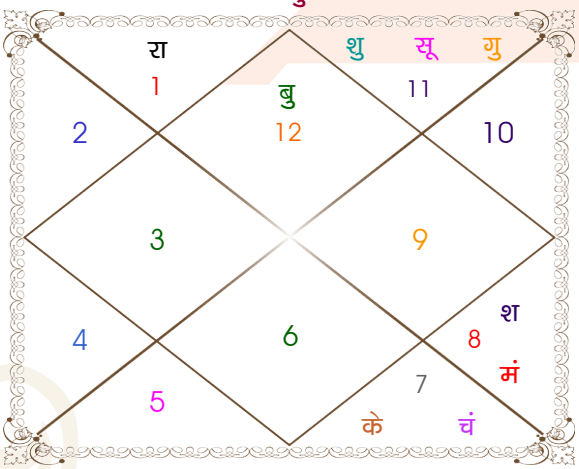

देह विचारः

होरा कुंडली

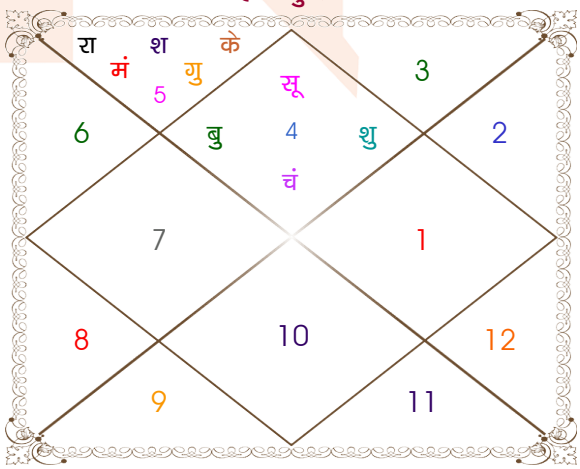

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

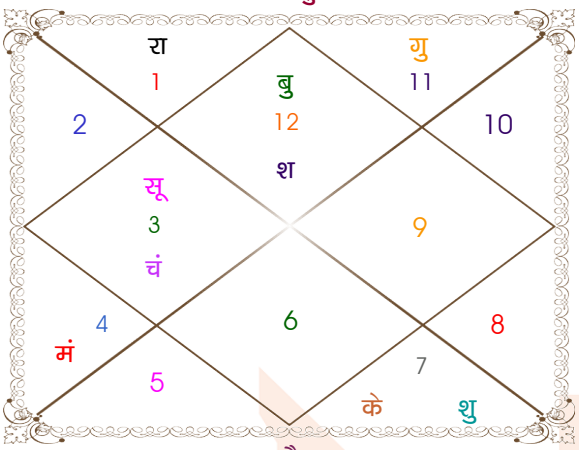

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

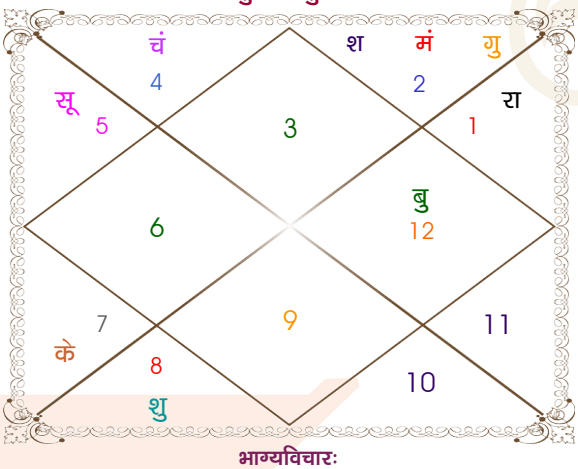

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

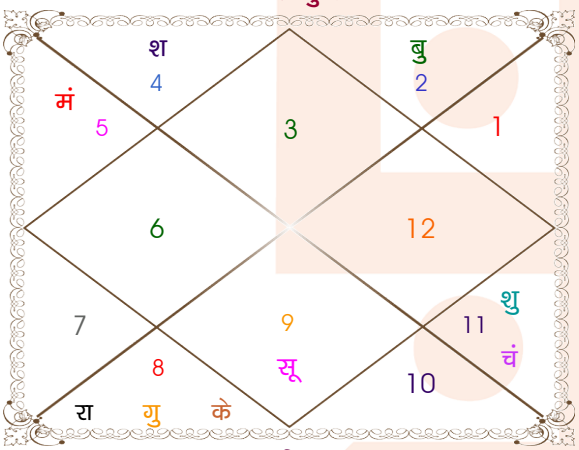

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

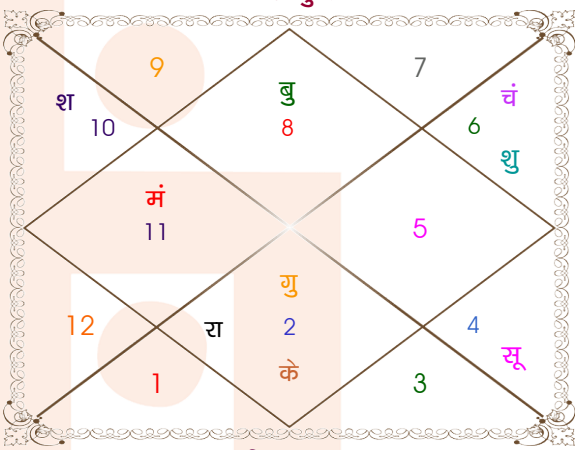

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

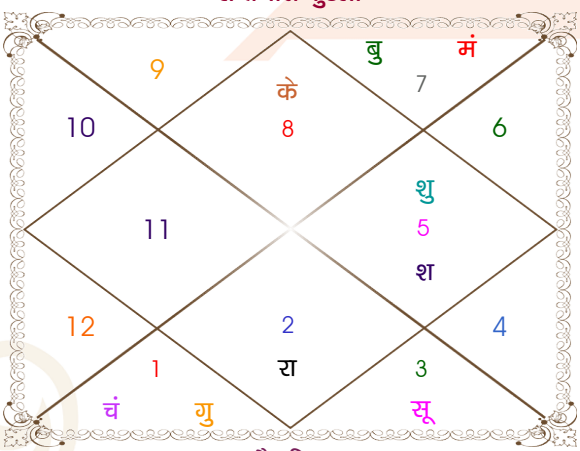

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

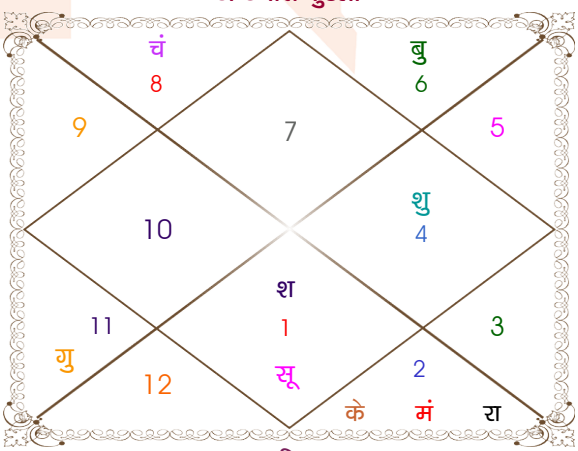

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

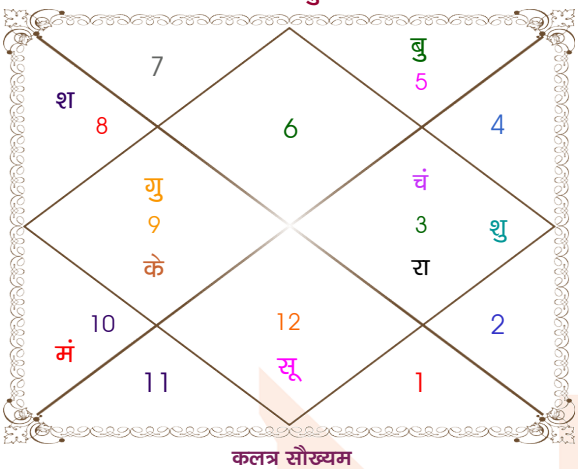

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

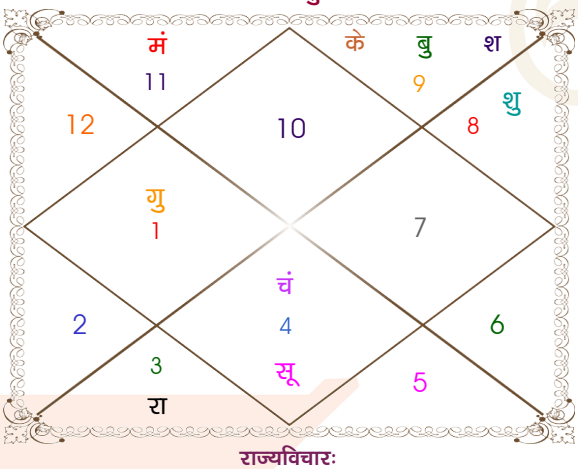

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

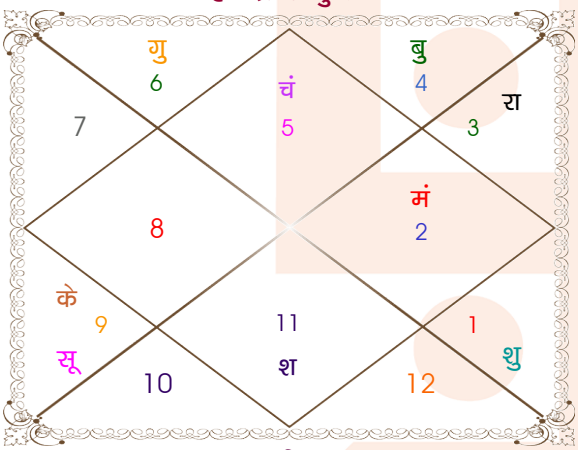

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

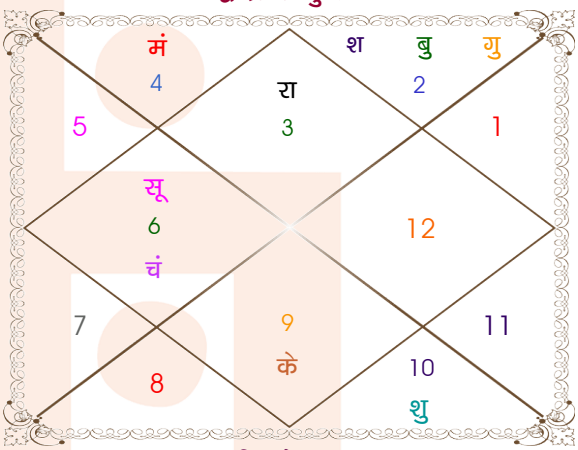

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

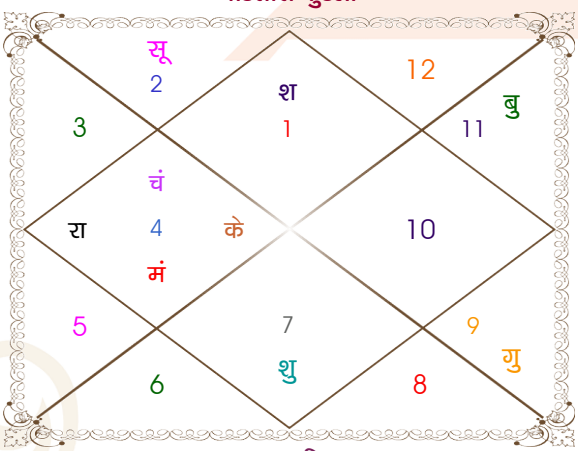

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

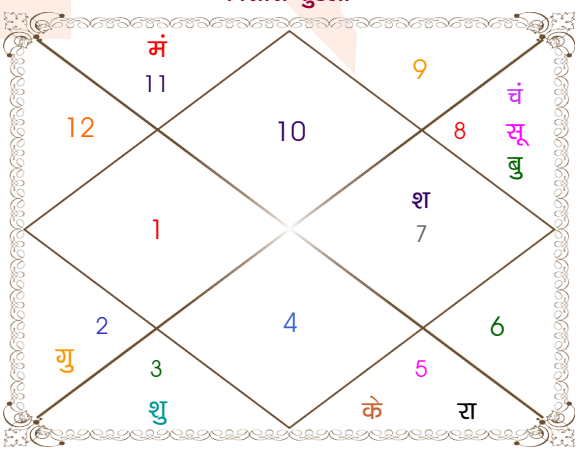

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

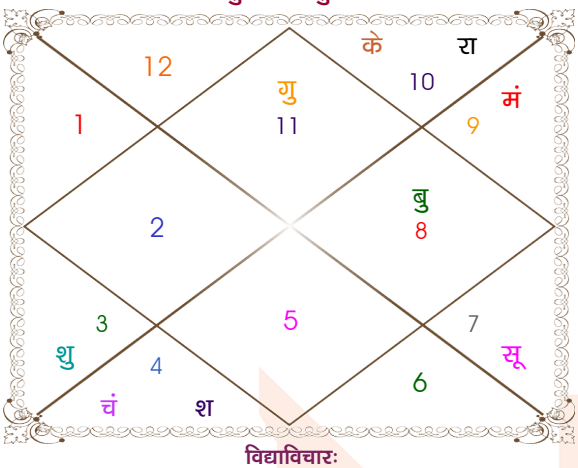

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

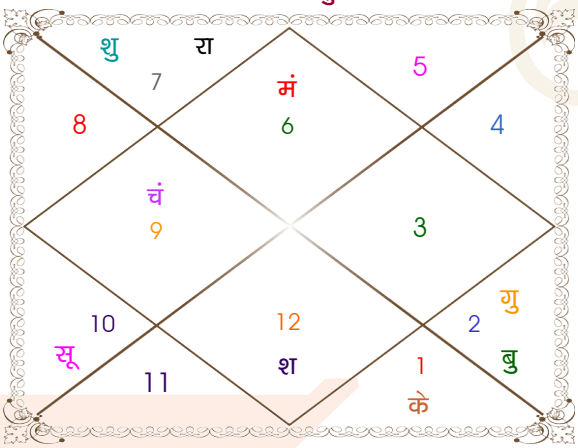

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

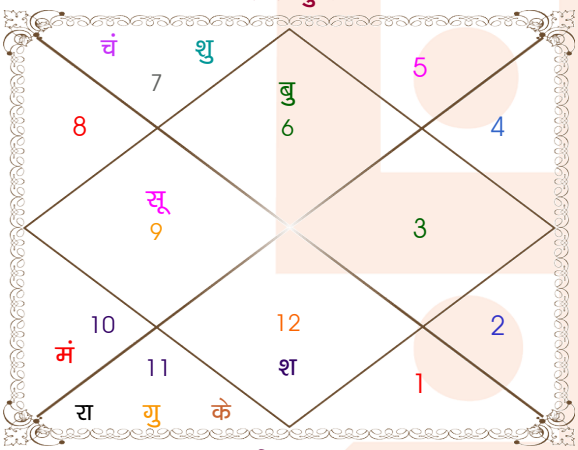

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

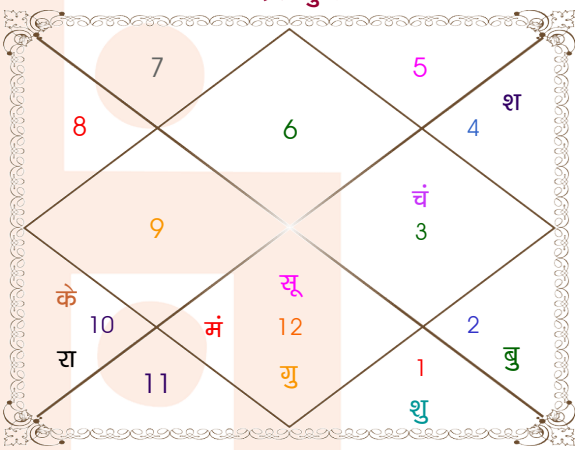

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

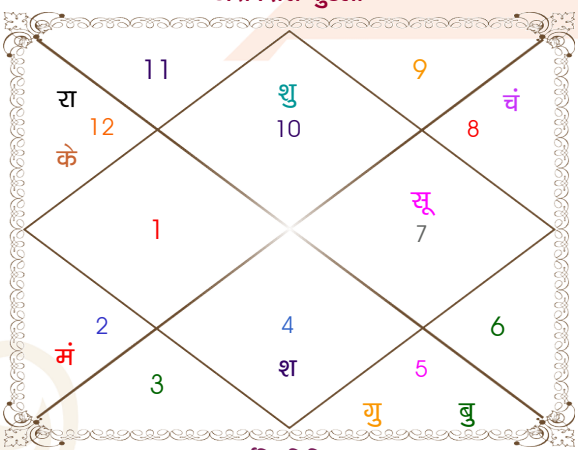

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

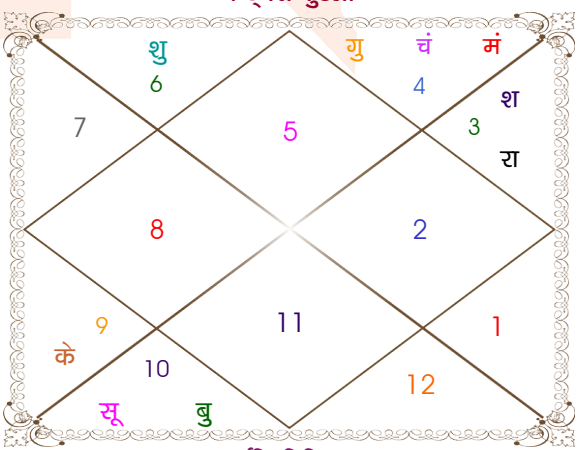

सर्वास्थितिविचारः

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---	मित्र	मित्र	शत्रु
शनि	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र
राहु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	शत्रु	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	सम	सम	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	सम	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	अतिमित्र	---	सम	सम
राहु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	43	1	38	3	11	50	51
सप्तवर्गज बल	75	75	120	129	107	131	71
ओजयुग्मक बल	15	0	0	15	30	0	0
केन्द्र बल	15	30	15	60	15	15	15
द्रेष्काण बल	0	15	0	0	15	15	15
कुल स्थान बल	148	121	173	208	178	211	153
कुल दिग्बल	37	13	55	59	50	27	38
नतोन्नत बल	36	24	24	60	36	36	24
पक्ष बल	24	72	24	36	36	36	24
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	15	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	30	0
वार बल	45	0	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	0	60	0
अयन बल	41	54	1	30	16	25	58
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	146	150	48	202	149	188	106
कुल चेष्टाबल	0	0	33	39	2	8	32
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-12	22	9	-16	-18	-16	10
कुल षट्बल	378	358	335	516	394	460	347
रूप षट्बल	6.3	6.0	5.6	8.6	6.6	7.7	5.8
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.3	1.0	1.1	1.2	1.0	1.4	1.2
संबंधित पद	2	7	5	3	6	1	4

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	31.77	6.99	35.50	11.11	4.70	19.41	40.57
कष्ट फल	25.18	37.36	24.28	34.63	53.21	22.70	15.51

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	394	335	460	516	358	378	516	460	335	394	347	347
भावदिग्बल	30	20	10	30	50	20	0	10	40	30	50	50
भावदृष्टि बल	-16	15	55	60	45	54	91	105	75	16	1	-18
कुल भाव बल	408	370	524	607	453	452	607	575	450	441	398	378
रूप भाव बल	6.8	6.2	8.7	10.1	7.5	7.5	10.1	9.6	7.5	7.3	6.6	6.3
संबंधित पद	9	12	4	2	5	6	1	3	7	8	10	11

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	2	2	2	5	3	2	2	6	6	2	5	39
गुरु	6	3	5	3	6	4	3	7	6	3	4	6	56
मंगल	1	4	3	5	5	3	0	4	6	4	2	2	39
सूर्य	0	5	4	6	7	3	2	4	7	3	5	2	48
शुक्र	3	4	5	4	3	6	5	5	4	6	4	3	52
बुध	2	5	5	6	5	4	3	4	7	5	4	4	54
चंद्र	5	4	3	3	6	5	3	3	7	4	1	5	49
बिन्दु	19	27	27	29	37	28	18	29	43	31	22	27	337
रेखा	37	29	29	27	19	28	38	27	13	25	34	29	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	0	3	1	0	0	4	4	0	3	15
गुरु	0	0	2	0	0	1	0	4	0	0	1	3	11
मंगल	0	1	3	3	4	0	0	2	5	1	2	0	21
सूर्य	0	2	2	4	7	0	0	2	7	0	3	0	27
शुक्र	0	0	1	1	0	2	1	2	1	2	0	0	10
बुध	0	1	2	2	3	0	0	0	5	1	1	0	15
चंद्र	0	0	2	0	1	1	2	0	2	0	0	2	10
रेखा	0	4	12	10	18	5	3	10	24	8	7	8	109

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	0	3	1	0	0	1	4	0	3	12
गुरु	0	0	1	0	0	1	0	4	0	0	1	3	10
मंगल	0	1	3	3	4	0	0	2	5	0	2	0	20
सूर्य	0	2	2	4	7	0	0	2	7	0	3	0	27
शुक्र	0	0	1	1	0	1	1	2	1	2	0	0	9
बुध	0	1	2	2	3	0	0	0	5	0	1	0	14
चंद्र	0	0	1	0	1	1	2	0	0	0	0	2	7
रेखा	0	4	10	10	18	4	3	10	19	6	7	8	99

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	234	61	169	120	92	59	100
ग्रह पिंड	92	20	70	22	89	31	15
शोध्य पिंड	326	81	239	142	181	90	115

अष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

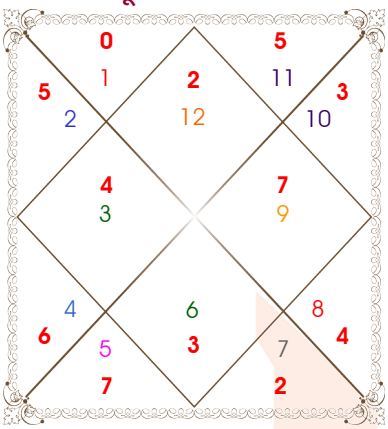

सर्वाष्टकवर्ग

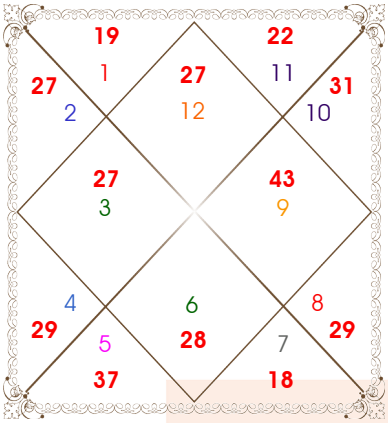

चंद्र का अष्टकवर्ग

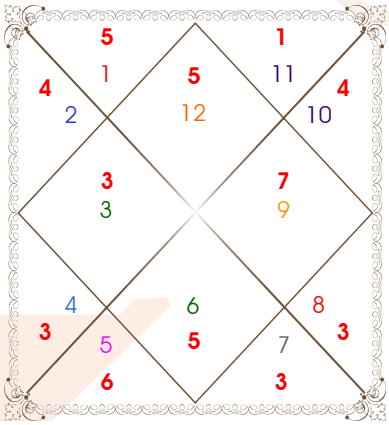

मंगल का अष्टकवर्ग

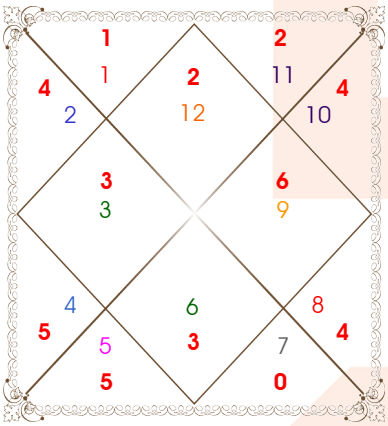

बुध का अष्टकवर्ग

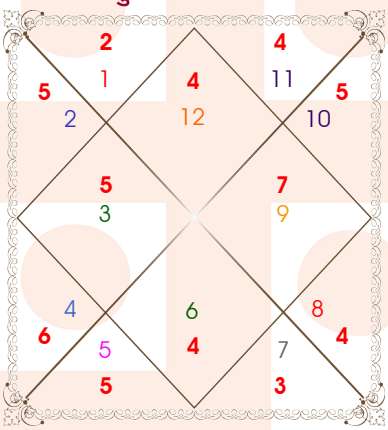

गुरु का अष्टकवर्ग

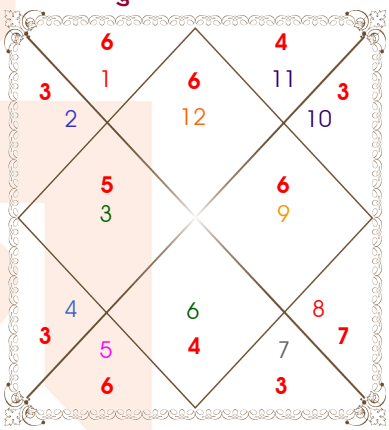

शुक्र का अष्टकवर्ग

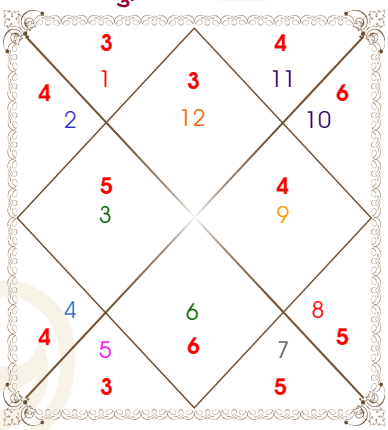

शनि का अष्टकवर्ग

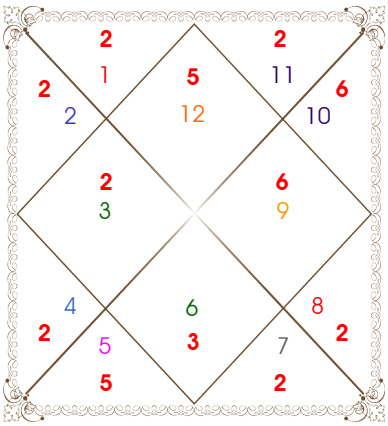

लग्न का अष्टकवर्ग

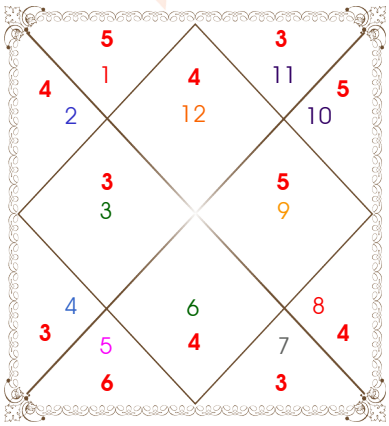

दशा

किसी जातक के अपरिवर्तनीय भूतकाल का परिणाम वर्तमान में चल रही अच्छी या बुरी दशाओं में प्रतिबिंबित होता है।

प्रत्येक जातक की कुंडली में उसके अच्छे-बुरे आने वाले कल का निर्देश होता है जिसका अनुभव आने वाले दशा-अन्तर्दशा काल में होता है। यदि किसी ग्रह की शुभ दशा चलती है तो जीवन में शुभ घटनाएं घटित होती हैं तथा आप सफलता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचते हैं। इसके विपरीत यदि दशा अशुभ होती है तो अन्यान्य समस्याओं, पीड़ा जनित कष्ट, बाधा, असफलता आदि का सामना करना पड़ता है।

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 5 वर्ष 3 मास 5 दिन

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
02/03/1986		07/06/1991		07/06/2010		07/06/2027		07/06/2034	
07/06/1991		07/06/2010		07/06/2027		07/06/2034		07/06/2054	
	00/00/0000	शनि	10/06/1994	बुध	03/11/2012	केतु	03/11/2027	शुक्र	06/10/2037
	00/00/0000	बुध	17/02/1997	केतु	31/10/2013	शुक्र	02/01/2029	सूर्य	07/10/2038
	00/00/0000	केतु	29/03/1998	शुक्र	31/08/2016	सूर्य	10/05/2029	चंद्र	06/06/2040
	00/00/0000	शुक्र	28/05/2001	सूर्य	07/07/2017	चंद्र	09/12/2029	मंगल	06/08/2041
	02/03/1986	सूर्य	10/05/2002	चंद्र	06/12/2018	मंगल	07/05/2030	राहु	06/08/2044
सूर्य	07/10/1986	चंद्र	10/12/2003	मंगल	04/12/2019	राहु	26/05/2031	गुरु	07/04/2047
चंद्र	06/02/1988	मंगल	18/01/2005	राहु	22/06/2022	गुरु	01/05/2032	शनि	07/06/2050
मंगल	12/01/1989	राहु	25/11/2007	गुरु	27/09/2024	शनि	10/06/2033	बुध	07/04/2053
राहु	07/06/1991	गुरु	07/06/2010	शनि	07/06/2027	बुध	07/06/2034	केतु	07/06/2054

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
07/06/2054		06/06/2060		07/06/2070		07/06/2077		07/06/2095	
06/06/2060		07/06/2070		07/06/2077		07/06/2095		00/00/0000	
सूर्य	24/09/2054	चंद्र	07/04/2061	मंगल	03/11/2070	राहु	18/02/2080	गुरु	25/07/2097
चंद्र	26/03/2055	मंगल	06/11/2061	राहु	22/11/2071	गुरु	13/07/2082	शनि	06/02/2100
मंगल	01/08/2055	राहु	08/05/2063	गुरु	27/10/2072	शनि	19/05/2085	बुध	15/05/2102
राहु	25/06/2056	गुरु	06/09/2064	शनि	06/12/2073	बुध	07/12/2087	केतु	20/04/2103
गुरु	13/04/2057	शनि	07/04/2066	बुध	03/12/2074	केतु	24/12/2088	शुक्र	19/12/2105
शनि	26/03/2058	बुध	06/09/2067	केतु	02/05/2075	शुक्र	25/12/2091	सूर्य	03/03/2106
बुध	30/01/2059	केतु	06/04/2068	शुक्र	01/07/2076	सूर्य	18/11/2092		00/00/0000
केतु	07/06/2059	शुक्र	06/12/2069	सूर्य	06/11/2076	चंद्र	20/05/2094		00/00/0000
शुक्र	06/06/2060	सूर्य	07/06/2070	चंद्र	07/06/2077	मंगल	07/06/2095		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 5 वर्ष 3 मा 7 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
02/03/1986		07/10/1986		06/02/1988		12/01/1989		07/06/1991	
07/10/1986		06/02/1988		12/01/1989		07/06/1991		10/06/1994	
	00/00/0000	चंद्र	16/11/1986	मंगल	26/02/1988	राहु	23/05/1989	शनि	28/11/1991
	00/00/0000	मंगल	15/12/1986	राहु	17/04/1988	गुरु	17/09/1989	बुध	02/05/1992
	02/03/1986	राहु	26/02/1987	गुरु	01/06/1988	शनि	03/02/1990	केतु	05/07/1992
राहु	28/03/1986	गुरु	02/05/1987	शनि	25/07/1988	बुध	07/06/1990	शुक्र	04/01/1993
गुरु	06/05/1986	शनि	18/07/1987	बुध	11/09/1988	केतु	28/07/1990	सूर्य	28/02/1993
शनि	21/06/1986	बुध	25/09/1987	केतु	01/10/1988	शुक्र	21/12/1990	चंद्र	30/05/1993
बुध	02/08/1986	केतु	23/10/1987	शुक्र	27/11/1988	सूर्य	03/02/1991	मंगल	03/08/1993
केतु	19/08/1986	शुक्र	12/01/1988	सूर्य	14/12/1988	चंद्र	17/04/1991	राहु	14/01/1994
शुक्र	07/10/1986	सूर्य	06/02/1988	चंद्र	12/01/1989	मंगल	07/06/1991	गुरु	10/06/1994

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
10/06/1994		17/02/1997		29/03/1998		28/05/2001		10/05/2002	
17/02/1997		29/03/1998		28/05/2001		10/05/2002		10/12/2003	
बुध	27/10/1994	केतु	13/03/1997	शुक्र	08/10/1998	सूर्य	15/06/2001	चंद्र	28/06/2002
केतु	24/12/1994	शुक्र	19/05/1997	सूर्य	04/12/1998	चंद्र	14/07/2001	मंगल	31/07/2002
शुक्र	05/06/1995	सूर्य	08/06/1997	चंद्र	11/03/1999	मंगल	03/08/2001	राहु	26/10/2002
सूर्य	25/07/1995	चंद्र	12/07/1997	मंगल	17/05/1999	राहु	24/09/2001	गुरु	11/01/2003
चंद्र	14/10/1995	मंगल	05/08/1997	राहु	07/11/1999	गुरु	09/11/2001	शनि	13/04/2003
मंगल	11/12/1995	राहु	04/10/1997	गुरु	09/04/2000	शनि	03/01/2002	बुध	04/07/2003
राहु	06/05/1996	गुरु	27/11/1997	शनि	09/10/2000	बुध	21/02/2002	केतु	06/08/2003
गुरु	14/09/1996	शनि	31/01/1998	बुध	22/03/2001	केतु	14/03/2002	शुक्र	11/11/2003
शनि	17/02/1997	बुध	29/03/1998	केतु	28/05/2001	शुक्र	10/05/2002	सूर्य	10/12/2003

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
10/12/2003		18/01/2005		25/11/2007		07/06/2010		03/11/2012	
18/01/2005		25/11/2007		07/06/2010		03/11/2012		31/10/2013	
मंगल	02/01/2004	राहु	23/06/2005	गुरु	27/03/2008	बुध	09/10/2010	केतु	24/11/2012
राहु	03/03/2004	गुरु	09/11/2005	शनि	20/08/2008	केतु	30/11/2010	शुक्र	23/01/2013
गुरु	26/04/2004	शनि	22/04/2006	बुध	30/12/2008	शुक्र	25/04/2011	सूर्य	10/02/2013
शनि	29/06/2004	बुध	17/09/2006	केतु	22/02/2009	सूर्य	08/06/2011	चंद्र	12/03/2013
बुध	26/08/2004	केतु	17/11/2006	शुक्र	26/07/2009	चंद्र	21/08/2011	मंगल	02/04/2013
केतु	18/09/2004	शुक्र	09/05/2007	सूर्य	10/09/2009	मंगल	11/10/2011	राहु	27/05/2013
शुक्र	25/11/2004	सूर्य	30/06/2007	चंद्र	26/11/2009	राहु	20/02/2012	गुरु	14/07/2013
सूर्य	15/12/2004	चंद्र	25/09/2007	मंगल	19/01/2010	गुरु	16/06/2012	शनि	09/09/2013
चंद्र	18/01/2005	मंगल	25/11/2007	राहु	07/06/2010	शनि	03/11/2012	बुध	31/10/2013

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र	
31/10/2013	
31/08/2016	
शुक्र	21/04/2014
सूर्य	12/06/2014
चंद्र	06/09/2014
मंगल	06/11/2014
राहु	10/04/2015
गुरु	26/08/2015
शनि	06/02/2016
बुध	01/07/2016
केतु	31/08/2016

बुध - सूर्य	
31/08/2016	
07/07/2017	
सूर्य	15/09/2016
चंद्र	11/10/2016
मंगल	29/10/2016
राहु	15/12/2016
गुरु	25/01/2017
शनि	15/03/2017
बुध	28/04/2017
केतु	16/05/2017
शुक्र	07/07/2017

बुध - चंद्र	
07/07/2017	
06/12/2018	
चंद्र	19/08/2017
मंगल	18/09/2017
राहु	05/12/2017
गुरु	12/02/2018
शनि	05/05/2018
बुध	17/07/2018
केतु	16/08/2018
शुक्र	11/11/2018
सूर्य	06/12/2018

बुध - मंगल	
06/12/2018	
04/12/2019	
मंगल	28/12/2018
राहु	20/02/2019
गुरु	09/04/2019
शनि	06/06/2019
बुध	27/07/2019
केतु	17/08/2019
शुक्र	16/10/2019
सूर्य	04/11/2019
चंद्र	04/12/2019

बुध - राहु	
04/12/2019	
22/06/2022	
राहु	21/04/2020
गुरु	24/08/2020
शनि	18/01/2021
बुध	30/05/2021
केतु	23/07/2021
शुक्र	26/12/2021
सूर्य	10/02/2022
चंद्र	29/04/2022
मंगल	22/06/2022

बुध - गुरु	
22/06/2022	
27/09/2024	
गुरु	10/10/2022
शनि	19/02/2023
बुध	16/06/2023
केतु	03/08/2023
शुक्र	19/12/2023
सूर्य	30/01/2024
चंद्र	08/04/2024
मंगल	26/05/2024
राहु	27/09/2024

बुध - शनि	
27/09/2024	
07/06/2027	
शनि	02/03/2025
बुध	19/07/2025
केतु	14/09/2025
शुक्र	25/02/2026
सूर्य	15/04/2026
चंद्र	06/07/2026
मंगल	02/09/2026
राहु	27/01/2027
गुरु	07/06/2027

केतु - केतु	
07/06/2027	
03/11/2027	
केतु	16/06/2027
शुक्र	11/07/2027
सूर्य	18/07/2027
चंद्र	31/07/2027
मंगल	08/08/2027
राहु	31/08/2027
गुरु	20/09/2027
शनि	13/10/2027
बुध	03/11/2027

केतु - शुक्र	
03/11/2027	
02/01/2029	
शुक्र	13/01/2028
सूर्य	04/02/2028
चंद्र	10/03/2028
मंगल	04/04/2028
राहु	07/06/2028
गुरु	03/08/2028
शनि	09/10/2028
बुध	09/12/2028
केतु	02/01/2029

केतु - सूर्य	
02/01/2029	
10/05/2029	
सूर्य	09/01/2029
चंद्र	19/01/2029
मंगल	27/01/2029
राहु	15/02/2029
गुरु	04/03/2029
शनि	24/03/2029
बुध	11/04/2029
केतु	19/04/2029
शुक्र	10/05/2029

केतु - चंद्र	
10/05/2029	
09/12/2029	
चंद्र	28/05/2029
मंगल	09/06/2029
राहु	11/07/2029
गुरु	09/08/2029
शनि	12/09/2029
बुध	12/10/2029
केतु	24/10/2029
शुक्र	29/11/2029
सूर्य	09/12/2029

केतु - मंगल	
09/12/2029	
07/05/2030	
मंगल	18/12/2029
राहु	09/01/2030
गुरु	29/01/2030
शनि	22/02/2030
बुध	15/03/2030
केतु	24/03/2030
शुक्र	18/04/2030
सूर्य	25/04/2030
चंद्र	07/05/2030

केतु - राहु	
07/05/2030	
26/05/2031	
राहु	04/07/2030
गुरु	24/08/2030
शनि	24/10/2030
बुध	17/12/2030
केतु	09/01/2031
शुक्र	13/03/2031
सूर्य	02/04/2031
चंद्र	04/05/2031
मंगल	26/05/2031

केतु - गुरु	
26/05/2031	
01/05/2032	
गुरु	10/07/2031
शनि	02/09/2031
बुध	21/10/2031
केतु	10/11/2031
शुक्र	05/01/2032
सूर्य	22/01/2032
चंद्र	20/02/2032
मंगल	11/03/2032
राहु	01/05/2032

केतु - शनि	
01/05/2032	
10/06/2033	
शनि	04/07/2032
बुध	30/08/2032
केतु	23/09/2032
शुक्र	29/11/2032
सूर्य	20/12/2032
चंद्र	22/01/2033
मंगल	15/02/2033
राहु	17/04/2033
गुरु	10/06/2033

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
10/06/2033		07/06/2034		06/10/2037		07/10/2038		06/06/2040	
07/06/2034		06/10/2037		07/10/2038		06/06/2040		06/08/2041	
बुध	31/07/2033	शुक्र	27/12/2034	सूर्य	25/10/2037	चंद्र	26/11/2038	मंगल	01/07/2040
केतु	21/08/2033	सूर्य	26/02/2035	चंद्र	24/11/2037	मंगल	01/01/2039	राहु	03/09/2040
शुक्र	20/10/2033	चंद्र	07/06/2035	मंगल	15/12/2037	राहु	02/04/2039	गुरु	30/10/2040
सूर्य	08/11/2033	मंगल	17/08/2035	राहु	08/02/2038	गुरु	22/06/2039	शनि	05/01/2041
चंद्र	08/12/2033	राहु	16/02/2036	गुरु	29/03/2038	शनि	27/09/2039	बुध	07/03/2041
मंगल	29/12/2033	गुरु	27/07/2036	शनि	26/05/2038	बुध	22/12/2039	केतु	01/04/2041
राहु	21/02/2034	शनि	05/02/2037	बुध	16/07/2038	केतु	26/01/2040	शुक्र	11/06/2041
गुरु	11/04/2034	बुध	27/07/2037	केतु	07/08/2038	शुक्र	07/05/2040	सूर्य	02/07/2041
शनि	07/06/2034	केतु	06/10/2037	शुक्र	07/10/2038	सूर्य	06/06/2040	चंद्र	06/08/2041

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
06/08/2041		06/08/2044		07/04/2047		07/06/2050		07/04/2053	
06/08/2044		07/04/2047		07/06/2050		07/04/2053		07/06/2054	
राहु	18/01/2042	गुरु	14/12/2044	शनि	07/10/2047	बुध	31/10/2050	केतु	02/05/2053
गुरु	13/06/2042	शनि	17/05/2045	बुध	19/03/2048	केतु	31/12/2050	शुक्र	12/07/2053
शनि	03/12/2042	बुध	02/10/2045	केतु	26/05/2048	शुक्र	21/06/2051	सूर्य	02/08/2053
बुध	08/05/2043	केतु	28/11/2045	शुक्र	04/12/2048	सूर्य	12/08/2051	चंद्र	06/09/2053
केतु	11/07/2043	शुक्र	09/05/2046	सूर्य	31/01/2049	चंद्र	06/11/2051	मंगल	01/10/2053
शुक्र	09/01/2044	सूर्य	27/06/2046	चंद्र	08/05/2049	मंगल	06/01/2052	राहु	04/12/2053
सूर्य	04/03/2044	चंद्र	16/09/2046	मंगल	14/07/2049	राहु	09/06/2052	गुरु	30/01/2054
चंद्र	03/06/2044	मंगल	12/11/2046	राहु	04/01/2050	गुरु	25/10/2052	शनि	08/04/2054
मंगल	06/08/2044	राहु	07/04/2047	गुरु	07/06/2050	शनि	07/04/2053	बुध	07/06/2054

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
07/06/2054		24/09/2054		26/03/2055		01/08/2055		25/06/2056	
24/09/2054		26/03/2055		01/08/2055		25/06/2056		13/04/2057	
सूर्य	12/06/2054	चंद्र	10/10/2054	मंगल	03/04/2055	राहु	19/09/2055	गुरु	03/08/2056
चंद्र	21/06/2054	मंगल	20/10/2054	राहु	22/04/2055	गुरु	02/11/2055	शनि	18/09/2056
मंगल	28/06/2054	राहु	17/11/2054	गुरु	09/05/2055	शनि	24/12/2055	बुध	29/10/2056
राहु	14/07/2054	गुरु	11/12/2054	शनि	29/05/2055	बुध	09/02/2056	केतु	15/11/2056
गुरु	29/07/2054	शनि	09/01/2055	बुध	16/06/2055	केतु	28/02/2056	शुक्र	03/01/2057
शनि	15/08/2054	बुध	04/02/2055	केतु	24/06/2055	शुक्र	23/04/2056	सूर्य	18/01/2057
बुध	31/08/2054	केतु	15/02/2055	शुक्र	15/07/2055	सूर्य	09/05/2056	चंद्र	11/02/2057
केतु	06/09/2054	शुक्र	17/03/2055	सूर्य	21/07/2055	चंद्र	05/06/2056	मंगल	28/02/2057
शुक्र	24/09/2054	सूर्य	26/03/2055	चंद्र	01/08/2055	मंगल	25/06/2056	राहु	13/04/2057

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
13/04/2057		26/03/2058		30/01/2059		07/06/2059		06/06/2060	
26/03/2058		30/01/2059		07/06/2059		06/06/2060		07/04/2061	
शनि	07/06/2057	बुध	09/05/2058	केतु	07/02/2059	शुक्र	07/08/2059	चंद्र	02/07/2060
बुध	26/07/2057	केतु	27/05/2058	शुक्र	28/02/2059	सूर्य	25/08/2059	मंगल	19/07/2060
केतु	15/08/2057	शुक्र	18/07/2058	सूर्य	06/03/2059	चंद्र	25/09/2059	राहु	03/09/2060
शुक्र	12/10/2057	सूर्य	02/08/2058	चंद्र	17/03/2059	मंगल	16/10/2059	गुरु	14/10/2060
सूर्य	29/10/2057	चंद्र	28/08/2058	मंगल	25/03/2059	राहु	10/12/2059	शनि	01/12/2060
चंद्र	27/11/2057	मंगल	15/09/2058	राहु	13/04/2059	गुरु	27/01/2060	बुध	13/01/2061
मंगल	18/12/2057	राहु	01/11/2058	गुरु	30/04/2059	शनि	25/03/2060	केतु	31/01/2061
राहु	08/02/2058	गुरु	12/12/2058	शनि	20/05/2059	बुध	16/05/2060	शुक्र	23/03/2061
गुरु	26/03/2058	शनि	30/01/2059	बुध	07/06/2059	केतु	06/06/2060	सूर्य	07/04/2061

चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
07/04/2061		06/11/2061		08/05/2063		06/09/2064		07/04/2066	
06/11/2061		08/05/2063		06/09/2064		07/04/2066		06/09/2067	
मंगल	19/04/2061	राहु	27/01/2062	गुरु	12/07/2063	शनि	06/12/2064	बुध	19/06/2066
राहु	21/05/2061	गुरु	10/04/2062	शनि	27/09/2063	बुध	26/02/2065	केतु	19/07/2066
गुरु	19/06/2061	शनि	06/07/2062	बुध	05/12/2063	केतु	01/04/2065	शुक्र	14/10/2066
शनि	22/07/2061	बुध	21/09/2062	केतु	02/01/2064	शुक्र	06/07/2065	सूर्य	09/11/2066
बुध	21/08/2061	केतु	23/10/2062	शुक्र	23/03/2064	सूर्य	04/08/2065	चंद्र	22/12/2066
केतु	03/09/2061	शुक्र	23/01/2063	सूर्य	17/04/2064	चंद्र	21/09/2065	मंगल	21/01/2067
शुक्र	08/10/2061	सूर्य	19/02/2063	चंद्र	27/05/2064	मंगल	25/10/2065	राहु	09/04/2067
सूर्य	19/10/2061	चंद्र	06/04/2063	मंगल	25/06/2064	राहु	20/01/2066	गुरु	17/06/2067
चंद्र	06/11/2061	मंगल	08/05/2063	राहु	06/09/2064	गुरु	07/04/2066	शनि	06/09/2067

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
06/09/2067		06/04/2068		06/12/2069		07/06/2070		03/11/2070	
06/04/2068		06/12/2069		07/06/2070		03/11/2070		22/11/2071	
केतु	19/09/2067	शुक्र	17/07/2068	सूर्य	15/12/2069	मंगल	16/06/2070	राहु	31/12/2070
शुक्र	24/10/2067	सूर्य	16/08/2068	चंद्र	31/12/2069	राहु	08/07/2070	गुरु	20/02/2071
सूर्य	04/11/2067	चंद्र	06/10/2068	मंगल	10/01/2070	गुरु	28/07/2070	शनि	21/04/2071
चंद्र	22/11/2067	मंगल	11/11/2068	राहु	07/02/2070	शनि	20/08/2070	बुध	15/06/2071
मंगल	04/12/2067	राहु	10/02/2069	गुरु	03/03/2070	बुध	11/09/2070	केतु	07/07/2071
राहु	05/01/2068	गुरु	02/05/2069	शनि	01/04/2070	केतु	19/09/2070	शुक्र	09/09/2071
गुरु	03/02/2068	शनि	06/08/2069	बुध	27/04/2070	शुक्र	14/10/2070	सूर्य	28/09/2071
शनि	07/03/2068	बुध	01/11/2069	केतु	07/05/2070	सूर्य	22/10/2070	चंद्र	30/10/2071
बुध	06/04/2068	केतु	06/12/2069	शुक्र	07/06/2070	चंद्र	03/11/2070	मंगल	22/11/2071

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - गुरु	
22/11/2071	
27/10/2072	
गुरु	06/01/2072
शनि	29/02/2072
बुध	17/04/2072
केतु	07/05/2072
शुक्र	03/07/2072
सूर्य	20/07/2072
चंद्र	17/08/2072
मंगल	06/09/2072
राहु	27/10/2072

मंगल - शनि	
27/10/2072	
06/12/2073	
शनि	31/12/2072
बुध	26/02/2073
केतु	21/03/2073
शुक्र	28/05/2073
सूर्य	17/06/2073
चंद्र	21/07/2073
मंगल	14/08/2073
राहु	13/10/2073
गुरु	06/12/2073

मंगल - बुध	
06/12/2073	
03/12/2074	
बुध	27/01/2074
केतु	17/02/2074
शुक्र	18/04/2074
सूर्य	06/05/2074
चंद्र	05/06/2074
मंगल	26/06/2074
राहु	20/08/2074
गुरु	07/10/2074
शनि	03/12/2074

मंगल - केतु	
03/12/2074	
02/05/2075	
केतु	12/12/2074
शुक्र	06/01/2075
सूर्य	13/01/2075
चंद्र	26/01/2075
मंगल	04/02/2075
राहु	26/02/2075
गुरु	18/03/2075
शनि	10/04/2075
बुध	02/05/2075

मंगल - शुक्र	
02/05/2075	
01/07/2076	
शुक्र	12/07/2075
सूर्य	02/08/2075
चंद्र	06/09/2075
मंगल	01/10/2075
राहु	04/12/2075
गुरु	30/01/2076
शनि	06/04/2076
बुध	06/06/2076
केतु	01/07/2076

मंगल - सूर्य	
01/07/2076	
06/11/2076	
सूर्य	07/07/2076
चंद्र	18/07/2076
मंगल	25/07/2076
राहु	13/08/2076
गुरु	30/08/2076
शनि	20/09/2076
बुध	08/10/2076
केतु	15/10/2076
शुक्र	06/11/2076

मंगल - चंद्र	
06/11/2076	
07/06/2077	
चंद्र	23/11/2076
मंगल	06/12/2076
राहु	07/01/2077
गुरु	04/02/2077
शनि	10/03/2077
बुध	09/04/2077
केतु	21/04/2077
शुक्र	27/05/2077
सूर्य	07/06/2077

राहु - राहु	
07/06/2077	
18/02/2080	
राहु	02/11/2077
गुरु	13/03/2078
शनि	16/08/2078
बुध	03/01/2079
केतु	01/03/2079
शुक्र	13/08/2079
सूर्य	01/10/2079
चंद्र	22/12/2079
मंगल	18/02/2080

राहु - गुरु	
18/02/2080	
13/07/2082	
गुरु	14/06/2080
शनि	30/10/2080
बुध	04/03/2081
केतु	24/04/2081
शुक्र	17/09/2081
सूर्य	31/10/2081
चंद्र	12/01/2082
मंगल	04/03/2082
राहु	13/07/2082

राहु - शनि	
13/07/2082	
19/05/2085	
शनि	25/12/2082
बुध	22/05/2083
केतु	21/07/2083
शुक्र	11/01/2084
सूर्य	03/03/2084
चंद्र	29/05/2084
मंगल	28/07/2084
राहु	01/01/2085
गुरु	19/05/2085

राहु - बुध	
19/05/2085	
07/12/2087	
बुध	28/09/2085
केतु	22/11/2085
शुक्र	26/04/2086
सूर्य	11/06/2086
चंद्र	28/08/2086
मंगल	21/10/2086
राहु	10/03/2087
गुरु	12/07/2087
शनि	07/12/2087

राहु - केतु	
07/12/2087	
24/12/2088	
केतु	29/12/2087
शुक्र	02/03/2088
सूर्य	21/03/2088
चंद्र	22/04/2088
मंगल	15/05/2088
राहु	11/07/2088
गुरु	31/08/2088
शनि	31/10/2088
बुध	24/12/2088

राहु - शुक्र	
24/12/2088	
25/12/2091	
शुक्र	25/06/2089
सूर्य	19/08/2089
चंद्र	18/11/2089
मंगल	21/01/2090
राहु	04/07/2090
गुरु	27/11/2090
शनि	20/05/2091
बुध	22/10/2091
केतु	25/12/2091

राहु - सूर्य	
25/12/2091	
18/11/2092	
सूर्य	10/01/2092
चंद्र	07/02/2092
मंगल	26/02/2092
राहु	15/04/2092
गुरु	29/05/2092
शनि	20/07/2092
बुध	05/09/2092
केतु	24/09/2092
शुक्र	18/11/2092

राहु - चंद्र	
18/11/2092	
20/05/2094	
चंद्र	02/01/2093
मंगल	03/02/2093
राहु	27/04/2093
गुरु	09/07/2093
शनि	03/10/2093
बुध	20/12/2093
केतु	21/01/2094
शुक्र	22/04/2094
सूर्य	20/05/2094

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : धान्या 0 वर्ष 11 मास 25 दिन

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
02/03/1986		25/02/1987		25/02/1991		26/02/1996		25/02/2002	
25/02/1987		25/02/1991		26/02/1996		25/02/2002		25/02/2009	
	00/00/0000	भ्राम	07/08/1987	भद्रि	06/11/1991	उल्क	25/02/1997	सिद्ध	07/07/2003
	00/00/0000	भद्रि	26/02/1988	उल्क	05/09/1992	सिद्ध	27/04/1998	संक	26/01/2005
	00/00/0000	उल्क	26/10/1988	सिद्ध	27/08/1993	संक	27/08/1999	मंग	07/04/2005
	02/03/1986	सिद्ध	06/08/1989	संक	06/10/1994	मंग	27/10/1999	पिंग	27/08/2005
सिद्ध	28/03/1986	संक	27/06/1990	मंग	26/11/1994	पिंग	26/02/2000	धांय	28/03/2006
संक	26/11/1986	मंग	07/08/1990	पिंग	08/03/1995	धांय	26/08/2000	भ्राम	06/01/2007
मंग	27/12/1986	पिंग	27/10/1990	धांय	07/08/1995	भ्राम	27/04/2001	भद्रि	27/12/2007
पिंग	25/02/1987	धांय	25/02/1991	भ्राम	26/02/1996	भद्रि	25/02/2002	उल्क	25/02/2009

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
25/02/2009		25/02/2017		25/02/2018		26/02/2020		25/02/2023	
25/02/2017		25/02/2018		26/02/2020		25/02/2023		25/02/2027	
संक	06/12/2010	मंग	07/03/2017	पिंग	07/04/2018	धांय	27/05/2020	भ्राम	07/08/2023
मंग	25/02/2011	पिंग	27/03/2017	धांय	07/06/2018	भ्राम	26/09/2020	भद्रि	26/02/2024
पिंग	07/08/2011	धांय	27/04/2017	भ्राम	27/08/2018	भद्रि	25/02/2021	उल्क	26/10/2024
धांय	06/04/2012	भ्राम	06/06/2017	भद्रि	06/12/2018	उल्क	27/08/2021	सिद्ध	06/08/2025
भ्राम	25/02/2013	भद्रि	27/07/2017	उल्क	07/04/2019	सिद्ध	28/03/2022	संक	27/06/2026
भद्रि	07/04/2014	उल्क	26/09/2017	सिद्ध	27/08/2019	संक	26/11/2022	मंग	07/08/2026
उल्क	07/08/2015	सिद्ध	06/12/2017	संक	05/02/2020	मंग	27/12/2022	पिंग	27/10/2026
सिद्ध	25/02/2017	संक	25/02/2018	मंग	26/02/2020	पिंग	25/02/2023	धांय	25/02/2027

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
25/02/2027		26/02/2032		25/02/2038		25/02/2045		25/02/2053	
26/02/2032		25/02/2038		25/02/2045		25/02/2053		25/02/2054	
भद्रि	06/11/2027	उल्क	25/02/2033	सिद्ध	07/07/2039	संक	06/12/2046	मंग	07/03/2053
उल्क	05/09/2028	सिद्ध	27/04/2034	संक	26/01/2041	मंग	25/02/2047	पिंग	27/03/2053
सिद्ध	27/08/2029	संक	27/08/2035	मंग	07/04/2041	पिंग	07/08/2047	धांय	27/04/2053
संक	06/10/2030	मंग	27/10/2035	पिंग	27/08/2041	धांय	06/04/2048	भ्राम	06/06/2053
मंग	26/11/2030	पिंग	26/02/2036	धांय	28/03/2042	भ्राम	25/02/2049	भद्रि	27/07/2053
पिंग	08/03/2031	धांय	26/08/2036	भ्राम	06/01/2043	भद्रि	07/04/2050	उल्क	26/09/2053
धांय	07/08/2031	भ्राम	27/04/2037	भद्रि	27/12/2043	उल्क	07/08/2051	सिद्ध	06/12/2053
भ्राम	26/02/2032	भद्रि	25/02/2038	उल्क	25/02/2045	सिद्ध	25/02/2053	संक	25/02/2054

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
25/02/2054		26/02/2056		25/02/2059		25/02/2063		26/02/2068	
26/02/2056		25/02/2059		25/02/2063		26/02/2068		25/02/2074	
पिंग	07/04/2054	धांय	27/05/2056	भ्राम	07/08/2059	भद्रि	06/11/2063	उल्क	25/02/2069
धांय	07/06/2054	भ्राम	26/09/2056	भद्रि	26/02/2060	उल्क	05/09/2064	सिद्ध	27/04/2070
भ्राम	27/08/2054	भद्रि	25/02/2057	उल्क	26/10/2060	सिद्ध	27/08/2065	संक	27/08/2071
भद्रि	06/12/2054	उल्क	27/08/2057	सिद्ध	06/08/2061	संक	06/10/2066	मंग	27/10/2071
उल्क	07/04/2055	सिद्ध	28/03/2058	संक	27/06/2062	मंग	26/11/2066	पिंग	26/02/2072
सिद्ध	27/08/2055	संक	26/11/2058	मंग	07/08/2062	पिंग	08/03/2067	धांय	26/08/2072
संक	05/02/2056	मंग	27/12/2058	पिंग	27/10/2062	धांय	07/08/2067	भ्राम	27/04/2073
मंग	26/02/2056	पिंग	25/02/2059	धांय	25/02/2063	भ्राम	26/02/2068	भद्रि	25/02/2074

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
25/02/2074		25/02/2081		25/02/2089		25/02/2090		26/02/2092	
25/02/2081		25/02/2089		25/02/2090		26/02/2092		00/00/0000	
सिद्ध	07/07/2075	संक	06/12/2082	मंग	07/03/2089	पिंग	07/04/2090	धांय	27/05/2092
संक	26/01/2077	मंग	25/02/2083	पिंग	27/03/2089	धांय	07/06/2090	भ्राम	26/09/2092
मंग	07/04/2077	पिंग	07/08/2083	धांय	27/04/2089	भ्राम	27/08/2090	भद्रि	25/02/2093
पिंग	27/08/2077	धांय	06/04/2084	भ्राम	06/06/2089	भद्रि	06/12/2090	उल्क	27/08/2093
धांय	28/03/2078	भ्राम	25/02/2085	भद्रि	27/07/2089	उल्क	07/04/2091	सिद्ध	02/03/2094
भ्राम	06/01/2079	भद्रि	07/04/2086	उल्क	26/09/2089	सिद्ध	27/08/2091		00/00/0000
भद्रि	27/12/2079	उल्क	07/08/2087	सिद्ध	06/12/2089	संक	05/02/2092		00/00/0000
उल्क	25/02/2081	सिद्ध	25/02/2089	संक	25/02/2090	मंग	26/02/2092		00/00/0000

उपाय

जिस प्रकार से बीमारी के अनुरूप दवाई की आवश्यकता होती है उसी प्रकार से प्रत्येक व्यक्ति को उसकी जन्मकुण्डली के अनुरूप उपाय करने से ही कष्टों का निवारण होता है। सटीक उपाय कष्ट निवारण शीघ्र करते हैं।

इस खण्ड में समस्याओं से निजात पाने हेतु अनेक प्रकार के उपाय बतलाए गए हैं जिसमें अंकशास्त्र एवं ज्योतिष के सिद्धांतों के अनुरूप भाग्यशाली अंक, भाग्यशाली रंग, भाग्यशाली रत्न, भाग्यशाली दिवस, ग्रहों के शांति हेतु मंत्र, साढ़े साती के उपाय, मांगलिक विचार, कालसर्प दोष आदि के उपायों की सरल एवं विशद व्याख्या की गई है।

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	2
मित्र अंक	2, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	100%	भाग्योदय, धन
पुखराज	गुरु	86%	कम खर्च, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	70%	धन, भाग्योदय
पन्ना	बुध	58%	स्वास्थ्य, सुख, दम्पति
नीलम	शनि	56%	भाग्योदय, धनार्जन, कम खर्च
मोती	चंद्र	50%	दुर्घटना से बचाव, सन्तति सुख
माणिक्य	सूर्य	0%	व्यय, शत्रु व रोग
हीरा	शुक्र	0%	व्यय, पराक्रम हानि, दुर्घटना
लहसुनिया	केतु	0%	दुर्घटना, व्यय

रत्न की शुभता

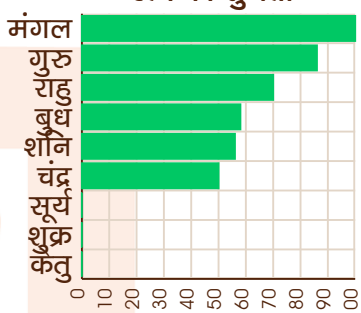

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	07/06/1991	9%	56%	100%	41%	98%	0%	56%	70%	0%
शनि	07/06/2010	0%	25%	92%	64%	86%	0%	69%	77%	0%
बुध	07/06/2027	9%	25%	100%	70%	86%	0%	56%	70%	0%
केतु	07/06/2034	0%	25%	100%	58%	86%	0%	38%	58%	16%
शुक्र	07/06/2054	0%	25%	100%	64%	86%	0%	62%	77%	3%
सूर्य	06/06/2060	22%	56%	100%	58%	92%	0%	38%	58%	0%
चंद्र	07/06/2070	9%	62%	100%	64%	86%	0%	56%	58%	0%
मंगल	07/06/2077	9%	56%	100%	41%	92%	0%	56%	58%	3%
राहु	07/06/2095	0%	25%	92%	58%	86%	0%	62%	83%	0%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति

तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मूंगा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पुखराज आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए गोमेद, पन्ना, नीलम एवं मोती रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

माणिक्य, हीरा व लहसुनिया रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप मंगल ग्रह की शुभता प्राप्त करें। मूंगा रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति बढ़ाकर आपको उच्चाधिकारी बनाएगा। मूंगा रत्न से आप स्वाभिमानी बनेंगे। मूंगा रत्न आपको मित्रों में श्रेष्ठ बनाएगा। रत्न शुभता विदेशी यात्राओं को सफल कर आपको लाभ दिलाएगी। रत्न शक्तियां आपको आत्मिक रूप से धार्मिक बनाए रखेंगी। यह रत्न आपके पुरुषार्थ भाव को बढ़ाकर आपको साहसपूर्ण कार्य करने की ओर प्रेरित

करेगा। मूंगा रत्न धारण से भूमि-भवन के कार्य भी पूरे होंगे।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में मंगल द्वितीयेश एवं नवमेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप मंगल की पूर्ण शुभता प्राप्त कर सकते है। मूंगा रत्न प्रभाव से आपकी धन वृद्धि हो सकती है। इसकी शुभता से आपकी पारिवारिक वृद्धि हो सकती है। माता-पिता का सुख सहयोग आपको प्राप्त होगा। मूंगा रत्न भूमि-भवन संपति का सुख आपको दे सकता है। रत्न शुभता आपके दांपत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने में सहयोगी सिद्ध हो सकता है। यह रत्न आपको आय के उत्तम साधन उपलब्ध करा सकता है। भाग्य भाव का रत्न होने के कारण यह रत्न आपके भाग्योदय का रत्न सिद्ध हो सकता है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु बारहवें भाव में स्थित है। गुरु ग्रह का पुखराज रत्न आपके लिए शुभ रत्न रहेगा। पुखराज रत्न धारण कर आप धार्मिक आचरण करेंगे। आपकी परोपकार प्रवृत्ति देगा। रत्न शुभता से आप अप्रिय भाषण और व्यर्थ विषयों पर व्यय करने से बचेंगे। पुखराज शुभता आपको चिकित्सक, लोकसेवक सम्पादक, वेदज्ञानी, धर्मगुरु या सम्पादक बना सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको जीवन काल में धन, सम्पत्ति, सोना, वस्त्र आदि पर्याप्त मात्रा में देगा। साथ ही दूर प्रदेशों के प्रवास से आपको लाभ और कीर्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में गुरु लग्नेश एवं दसमेश है। आप गुरु रत्न पुखराज रत्न धारण कर सकते है। पुखराज रत्न धारण से आपके स्वास्थ्य सुख में वृद्धि हो सकती है। रत्न शुभता से आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली हो सकता है। माता-पिता सुख में बढ़ोतरी करने में पुखराज रत्न की शुभता प्राप्त हो सकती है। इसके अतिरिक्त पुखराज रत्न आपकी आरोग्यता को बढ़ाएगा। पारिवारिक सुख प्राप्ति के लिए भी पुखराज रत्न की शुभता आपके लिए बनी हुई है। पुखराज रत्न दशमेश का रत्न होने के कारण आपके आजीविका क्षेत्र को शुभ रख आपको उन्नति और सफलता के प्रर्याप्त अव्सर दे सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध

होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

गोमेद

आपकी कुंड़ली में राहु दूसरे भाव में स्थित है। राहु रत्न गोमेद धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। यह रत्न धारण कर आप धन संचय के प्रति सचेत रहेंगे। धन के प्रति आपका मोह बढ़ेगा। सत्य बोलने की ओर आप अग्रसर होंगे। गोमेद रत्न की शुभता चातुर्य एवं नीति निर्माण से धन संचय करने में आपको सफलता देगी। गोमेद आपके स्वभाव को सौम्य बनाए रखेगा। गोमेद रत्न धारण कर आप पारिवारिक संस्कारों का नियम से पालन करेंगे। यह रत्न आपको विचार अभिव्यक्ति का कौशल देगा।

राहु मेष राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल नवम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपके जीवन के शुभ फलों की अधिकता होगी। आप धार्मिक कार्यों में रुचि लेंगे। आपको लोगों द्वारा पसंद किया जाएगा। रत्न शुभता से आपको अपने सभी प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। यह रत्न आपको भाग्यशाली बना रहा है। इस रत्न की शुभता से आप प्रवासी हो सकते हैं तथा यह रत्न आपको तीर्थाटन प्रवृत्ति देगा। आप धार्मिक, उदार, कृतज्ञ, दयालु, देव- भक्त, भाई बन्धुओं के संरक्षक, प्रसिद्ध तथा पराक्रमी होंगे। एवं यह रत्न आपको अनेक प्रकार के धन रत्नादि से सुखी तथा सभी प्रकार की सुख समृद्धि देगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध लग्न भाव में स्थित है। इसलिए आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। बुध रत्न पन्ना आपकी बौद्धिक योग्यता, ज्ञान क्षमता एवं शिक्षा के प्रति आपकी अभिरुचि को जागृत करेगा। तथा पन्ना रत्न लेखन एवं कला का विकास करेगा। यह रत्न भाई-बहनों का स्नेह देगा एवं आप शत्रुओं को चातुर्य से परास्त कर सकेंगे। यह रत्न व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति एवं लाभ प्राप्ति के सुअवसर देकर व्यापार में आपको अच्छी सफलता देगा। पन्ना रत्न मित्रों से संबंध मजबूत करेगा। संचार क्षेत्रों से आय मार्ग शुभफलकारी होंगे।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में बुध चतुर्थेश एवं सप्तमेश है। बुध रत्न पन्ना धारण कर आप बुध की शुभता में वृद्धि कर सकते है। रत्न शुभता से आपकी माता के स्वास्थ्य सुख में बढ़ोतरी हो सकती है। जीवन साथी का स्नेह आपके साथ बना रहेगा। पन्ना रत्न शुभता से आपका पारिवारिक जीवन उल्लासपूर्ण हो सकता है। भूमि-संपति से लाभ प्राप्ति में भी आपको यह पन्ना रत्न उपयोगी हो सकता है। बुध पन्ना आपको स्वतंत्र व्यापार की योग्यता दे सकता है। लाभ व सम्मान प्राप्ति के लिए भी यह पन्ना रत्न आपके लिए शुभ रत्न सिद्ध हो सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि नवम भाव में स्थित है। आप शनि रत्न नीलम धारण करें। नीलम रत्न की शुभता से आपको भ्रमणशील और धर्मात्मा के गुणों से ओत प्रोत करेगा। रत्न शुभता से आप मृदुभाषी बनेंगे। तीर्थयात्राओं में भी आपकी अच्छी रुचि बनेगी। रत्न प्रभाव से आप आध्यात्म की ओर उन्मुख होंगे। यह रत्न आपके भाग्य में वृद्धि करेगा। नीलम रत्न शुभता आपको तीर्थयात्राओं से सुख देगी। यह रत्न आपको बड़ी प्रसिद्धि देगा। नीलम रत्न आपको शिक्षक, वकील या ज्योतिषी के रूप में विख्यात कर सकता है।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में शनि एकादशेश एवं द्वादशेश है। आप शनि रत्न नीलम धारण कर सकते है। नीलम रत्न शुभ होकर आपको उत्तम लाभ, मोक्ष, विदेश यात्रा एवं ऐश्वर्य प्राप्ति में शुभ हो सकता है। यह रत्न आपके आय मार्ग की बाधाओं को दूर कर सकता है। व्ययों पर नियंत्रण रखने में शनि रत्न लाभकारी सिद्ध हो सकता है। नीलम रत्न शुभता से आपको बाहरी मामलों का प्रतिनिधित्व करने के अवसर प्राप्त हो सकते है। आय बढ़ने और व्ययों पर नियंत्रण होने

से संचित धन भी स्वतः ही बढ़ेगा। मेहनत, निष्ठा बढ़ सकती है और मानसिक चिंताओं में कमी हो सकती है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र अष्टम भाव में स्थित है। चंद्र की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न आप को व्यापार क्षेत्र में लाभ देगा। यह रत्न आपको स्वाभिमानी बनायेगा। आप को ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति हो सकती है। भौतिक जीवन में आपकी रुचि बनी रहेगी। मोती रत्न आपके अपनी माता से संबन्ध मधुर बनाने में सहयोग करेगा। कार्य बाधरहित पूर्ण होंगे। कफ, जुकाम व खांसी जैसे रोगों से बचाव होगा। मोती रत्न आपके लिए शुभ होने के कारण आपको किसी बंधन का भय हो तो वह दूर होगा।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में चंद्र पंचमेश है। पंचमेश चंद्र का मोती रत्न धारण कर आप चंद्र की शुभता वृद्धि कर सकते है। यह रत्न आपको मन की शांति देगा तथा आपकी मानसिक चिंताओं को दूर करेगा। मोती रत्न की शुभता से आपके यश एवं प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी हो सकती है। मोती रत्न धारण कर आप मधुरभाषी, उच्च मनोबल, दूरदशी एवं योग्य व्यक्ति बन सकते है। इस रत्न की शुभता से अनेक विद्याओं का धनी बना सकती है। मोती शुभ रत्न होकर आपके संतान पक्ष को प्रबल रख सकता है। रत्न प्रभाव से जीवन साथी के प्रति आपकी स्नेह वृद्धि हो सकती है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातःकाल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी

रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको धर्मार्थ कार्यों में सुरुचि की कमी हो सकती है। आप दिखावों के लिए अत्यधिक व्यय कर सकते है। यह व्यय परोपकार से हटकर अन्य कार्यों पर हो सकते है। माणिक्य रत्न प्रभाव से व्यय व्यर्थ के कार्यों पर भी अधिक हो सकते है। आंखों के रोग आपको नज़र दोष दे सकते है। आपको चश्में का प्रयोग करना पड़ सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर गेहूं, सोना एवं चांदी इत्यादि क्षेत्रों का चयन आजीविका क्षेत्र के रूप में करने से आपको बचना होगा। इसके अलावा बिजली का काम, कच्चा कोयला या हाथी दांत से जुड़े क्षेत्रों में कार्य करना भी आपके लिए आंशिक रूप से अनुकूल नहीं रहेगा।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में सूर्य षष्ठेश है। सूर्य रत्न माणिक्य आपकी शिक्षा को अपूर्ण कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके व्यक्तित्व के गुणों में कमी हो सकती है। समस्याओं का समाधान निकालने की जगह समस्याओं से भागने की प्रवृति यह रत्न आपमें विकसित कर सकता है। माणिक्य रत्न प्रभाव से आपको सरकारी क्षेत्रों में नौकरी प्राप्ति में संघर्षों का सामना करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव से कोर्ट कचहरी के मामलों में आपको समझौते करने के लिए आप बाध्य हो सकते है। इसके अलावा माणिक्य रत्न रोग, ऋण एवं शत्रु पक्ष की चिंताओं में समय समय पर वृद्धि करता रहेगा। आत्मविश्वास की कमी आपकी उन्नति के विकास को बाधित कर सकती है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करने पर आपका वैवाहिक जीवन तनाव युक्त हो सकता है। हीरा रत्न आपके व्ययों को सौंदर्य विषयों पर केन्द्रित कर सकता है। इसके साथ ही रत्न प्रभाव से आपके व्यय ग्रहस्थ जीवन के सुख प्राप्ति से संबंधी हो सकते है। विदेश गमन, शयन सुख को भी यह रत्न प्रभावित कर रहा है। हीरा रत्न आपके मोक्ष प्राप्ति के मार्ग को बाधित कर सकता है। इस रत्न के प्रभाव से हो सकता है कि आपका धन-धान्य, आय एवं उन्नति आशातीत न हों। यह भी संभावित है कि आप अपने जीवन साथी का समय पर साथ न दे पाएं। दायित्वों के निर्वाह में आपसे कहीं कुछ त्रुटि हो सकती है। आपके जीवन साथी का स्वास्थ्य कुछ कमजोर हो सकता है।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में शुक्र तृतीयेश एवं अष्टमेश है। शुक्र रत्न हीरा आपके व्यक्तित्व के तेज में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव आपके कार्यों की निपुणता में न्यूनता देगा। यह रत्न साहस और पराक्रम दोनों का सहयोग आपको प्राप्त नहीं होने देगा। विषयों को सूक्ष्मता से समझने का गुण यह रत्न आपको दे सकता है। हीरा रत्न प्रभाव से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। यह रत्न आपको वात रोग दे सकता है। वैवाहिक जीवन के सुख भी रत्न प्रभाव से बाधित हो सकते है। इस रत्न को धारण करने के बाद आपकी जीवनशैली घूमने फिरने की अधिक हो सकती है। हीरा रत्न जीवन के विशेष विषयों में आपको परिवर्तन करना सुखद लग सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने आप कुछ विषयों में आप लोभी और चालाक हो सकते है। आपके द्वारा दूसरों को शारीरिक और मानसिक कष्ट हो सकते है। अनजाने में आपसे पाप हो सकते है। आपके द्वारा किये गये कार्यो से विवेकहीनता परिलक्षित हो सकती है। रत्न प्रतिकूलता से आपको मुखरोग या दंत रोग हो सकता है। केतु रत्न आपको अकस्मात हानि करा सकता है। यह रत्न आपका ऑपरेशन करा सकता है। आपको विरासत मिलने में तकलीफ हो सकती है। सरकार के द्वारा आपकी धन हानि हो सकती है।

केतु तुला राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती है। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

दशानुसार रत्न विचार

बुध
(07/06/2010 - 07/06/2027)

बुध की दशा में आपका मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, गोमेद व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, हीरा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(07/06/2027 - 07/06/2034)

केतु की दशा में आपका मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व मोती रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, माणिक्य व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(07/06/2034 - 07/06/2054)

शुक्र की दशा में आपका मूंगा, पुखराज व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, माणिक्य व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(07/06/2054 - 06/06/2060)

सूर्य की दशा में आपका मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, गोमेद व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, हीरा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(06/06/2060 - 07/06/2070)

चन्द्र की दशा में आपका मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, मोती, गोमेद व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, हीरा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(07/06/2070 - 07/06/2077)

मंगल की दशा में आपका मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, मोती व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ

रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, लहसुनिया व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(07/06/2077 - 07/06/2095)

राहु की दशा में आपका मूंगा, पुखराज व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, हीरा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली मीन लग्न की है। आपका व्यक्तित्व गुरु के समान है। आप थोड़े से जिद्दी, धार्मिक और संयमी स्वभाव के है। गुरु के समान आदर और सम्मान प्राप्त कर सकते हैं। बहुत जल्दी लोगों के बीच में अपनी जगह बना लेते है। आपके चहरे पर एक तेज होता हैं। आप अच्छे वक्ता, गुरु और सलाहकार साबित हो सकते हैं। साथ ही आप थोड़े से पारंपरिक भी हैं, अतः आसानी से अपनी जड़ों से दूर नहीं जा पाते। आपको आसानी से गुस्सा नहीं आता परन्तु जब आता है तो अत्यधिक आता है।

आपकी प्रकृति गंभीर है, और आप सभी बातें भूल सकते है। परन्तु अपनी परम्परा और सिद्धांतों को नहीं भूल सकते। धर्म का पालन करना आपके जीवन का अभिन्न अंग है। आप महत्वकांशी है, आपको स्वतन्त्र रहना पसंद है, बड़ो की बातों पर अमल करते है। आत्मविश्वासी है, और अपने कार्यो में आपको दक्षता प्राप्त हैं। साथ ही आपने दृढ निश्चय का गुण होता है। इसी कारण कार्यो को समय पर पूरा करा लेते हैं। आपकी कार्यप्रणाली साही और सरल होती है परन्तु आप लोक अक्सर ज्ञान बाँटते हुए दिखाई देते हैं। आप गलती करने पर सजा भी देते हैं और कभी-कभी नम्र और कभी-कभी कठोर भी बन जाते हैं।

कुंडली में षष्ट भाव का पीड़ित होना या इस भाव में अन्य ग्रहों का स्थित होना उपरोक्त सभी वस्तुओं में अशुभता लाता हैं। अष्टम भाव से आयु, बिना कमाया हुआ धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग की जानकारी प्राप्त होती हैं। अष्टम भाव की तरह द्वादश भाव में भी सभी ग्रह अनिष्ट करते है। द्वादश भाव भी त्रिक भाव है। यह भाव आपकी निद्रा, धन का निवेश, विवाह में विलम्ब, अधिकार का नाश, कैद, शरीर विकार तथा हानियों की जानकारी देता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

आपके लग्न के लिए सूर्य षष्टेश, शुक्र अष्टमेश व तृतीयेश, मंगल द्वादशेश तथा नवमेश हैं। षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव दुष्ट व अशुभ स्थान हैं। अपनी कुंडली की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको छः, आठ व बारहवें भाव- भावेश को शुभता प्रदान करनी होगी। कुंडली के ये भाव आपको रोग, ऋण, शत्रु, बाधाएं, देने के साथ साथ दैहिक, सामाजिक, मानसिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्ट दे सकते हैं। इन सभी विषयों के साथ साथ षष्ट भाव प्रतियोगिता, संघर्ष तथा सौतेली माता का भी भाव है।

अष्टम भाव संकट, चिंता और दुर्भाग्य का स्थान हैं, इस भाव में स्थित होने से चन्द्र बलहीन हो गया हैं। चन्द्र की इस स्थिति से आपको शिशु अवस्था में गंभीर स्वास्थ्य संकटों का सामना करना पड़ा होगा। मानसिक और दैहिक निर्बलता के कारण असफलता और अन्य कष्ट भोगने पड़ सकते हैं। निर्धनता, मातर कष्ट, घर, जमीन, जायदाद और पैतृक सम्पति से सम्बंधित विवाद हो सकता हैं। चन्द्र के प्रभाव से संपति सुख, विदेश स्थानों में हानि, अपयश पीड़ित हो सकते है।

अष्टम भाव में केतु अशुभ फलदायक होते है। आपको अपनी बुद्धि को गलत कार्यो में लगाने से बचना चाहिए। आपका उद्यम बाधित हो सकता है। साथ ही यह योग आपको परिश्रम का उचित प्रतिफल नहीं देता। जीवन साथी से शत्रुता भाव उत्पन्न हो सकता है। स्वजनों से संबंधों को मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते है।

सूर्य आपके द्वादश भाव में शत्रुओं की बहुलता, परन्तु शत्रुओं पर विजय, धन-धान्य से युक्त, कुशल राजनीतिज्ञ, उतम प्रशासक, नेत्र प्रकाश में कमी, मामा को कष्ट, और वाहनों से शारीरिक कष्ट की संभावना उत्पन्न करता है।

गुरु अष्टम भाव में आपमें स्वार्थ भाव की वृद्धि कर रहा है, यह योग मामा को कष्ट दे सकता है, सट्टा-जुआ की लत से दूर रहे, ऋण ग्रस्तता, शत्रुओं से पीड़ित, संपति का नाश और माता -पिता से मांसिक मतभेद करा सकता है।

शुक्र आपकी कुंडली के द्वादश भाव में स्थित है, आपको स्वार्थ भावना का त्याग करना चाहिए, व्यर्थ के कामों में आप अत्यधिक व्यय कर सकते है, आत्मीय जनों से मनमुटाव हो सकता है, विरोधियों के कपट को न समझते हुए आप उनसे आत्मीयता रखे। जीवन साथी की भावनाओँ को आहात करने से बचे। या आपको विवाहेत्तर संबंधों में रूचि हो सकती है, अवस्था बढ़ने के साथ साथ

आप पर मोटापा हावी हो सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 2, 6, 7, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती तृतीय ढैया	02/03/1986-17/12/1987	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढेसाती द्वितीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

तृतीय चक्रः

साढेसाती तृतीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	बदनामी
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	दम्पति
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में स्थित है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगे तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगे। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्य का उदय नहीं होता अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि को भी कम ही करेंगे। आयु के साथ साथ आप जीवन में इनके महत्व को भी अवश्य स्वीकार करेंगे। आपको समाज में विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त होगा लेकिन इसमें विलम्ब हो सकता है। आप एक पराक्रमी एवं उत्साही व्यक्ति है अतः आपको इस ओर से कोई चिन्ता नहीं होगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक रहेगा साथ ही शुभाशुभ कार्यों पर आप व्यय करेंगे। जमीन जायदाद पर अधिक से अधिक व्यय करने के इच्छुक रहेंगे इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ की प्राप्ति हो सकती है। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही दाम्पत्य जीवन का आप सुख पूर्वक उपभोग करेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपके पराक्रम से प्रभावित रहेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य सांसारिक सुख संसाधनों की भी आपको परिश्रम पूर्वक प्राप्ति होगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव से आप कर्म योगी रहेंगे तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके भाग्योदय करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जन भी आपसे सन्तुष्ट रहेंगे। आप भी उचित रूप से उनका लालन पालन

करेंगे। साथ ही आपसी संबंधों में मधुरता भी बनी रहेगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र

पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में कुलिक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। फलस्वरूप जातक को अर्थोपार्जन करने में विशेष रूप से संघर्ष करना पड़ता है। खर्चों की बहुलता रहती है। परिणामस्वरूप आर्थिक परेशानियाँ बनी रहती हैं और विद्या अध्ययन में विशेष रूप से सफलता हासिल नहीं होती है। चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण जीवन मानसिक रूप से अशान्त रहता है तथा जीवन में आगे बढ़ने के लिए विशेष रूप से संघर्ष करना पड़ता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का वैवाहिक जीवन कष्टमय व्यतीत होता है। यहाँ तक कि कभी-कभी संबंध विच्छेद होने की सम्भावना भी बन जाती है। जातक अपने जीवन में अनेक स्त्रियों से संसर्ग कर अपमानित होता है। परिवारिक सदस्यों से विभेद रहता है और मित्रगण कदम-कदम पर धोखा देते हैं तथा सामाजिक प्रतिष्ठा का अभाव रहता है। जातक सदा परोपकार करने में तत्पर रहता है परन्तु अन्य लोग इसका नाजायज फायदा उठाते रहते हैं, जिससे जातक को केवल नुकसान ही मिलता है। जातक के पिता की मृत्यु अल्पायु में हो जाती है। सुख भोग का अभाव रहता है। भूत प्रेतों से परेशानियाँ बनी रहती हैं।

इस योग के कारण जातक को सन्तान सुख का अभाव रहता है। पुत्र होकर भी क्रूर एवं दुष्ट प्रवृत्ति का हो जाता है और मनमानी करने वाला होता है तथा आज्ञा का पालन प्रायः नहीं के बराबर ही करता है। जातक के स्वास्थ्य में निरन्तर गिरावट होती रहती है और इस योग के प्रभाव से जातक मानसिक रूप से चिन्तित रहता है। अपने वृद्धावस्था को लेकर सोचता रहता है कि क्या होगा, किस तरह समय व्यतीत होगा तथा इस अवस्था में जाकर जातक को कष्ट ही मिलता है। लेकिन सब कुछ होते हुए भी जातक व्यापार में इच्छित सफलता प्राप्त करता है और जीवन में सम्मान भी पाता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 16 सोमवार का व्रत करें।
3. राहु मन्त्र का 18000(अट्ठारह हजार) उनकी महादशा, अन्तर्दशा में करें या करवायें।
4. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
5. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
6. नव नाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
7. श्रावण मास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. तिरुपति बालाजी के समीप कालहस्ती शिवमन्दिर में जाकर कालसर्प योग की शान्ति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें।
9. श्रद्धापूर्वक पितरों का प्रतिवर्ष श्राद्धपक्ष में श्राद्ध करें। कम से कम सात वर्ष तक अवश्य करें।

10. सरस्वती जी की एक वर्ष तक विधिवत उपासना करें।
11. गोमेद, तिल, सरसों, कम्बल, खड्ग, नीलवस्त्र, शूर्प आदि समय समय पर दान करें।
12. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबालकर राहु की महादशा या अन्तर दशा आदि में सवा महीने तक स्नान करें।
13. शुभ मुहूर्त में नागपाश यन्त्र को अभिमन्त्रित कर धारण करें।
14. शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत आरंभ करना चाहिए। यह व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीज मन्त्र की माला जपें। तदन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुश लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें।
15. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वास्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
16. मंगलवार एवं शनिवार को रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड का 108 बार पाठ श्रद्धापूर्वक करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।
7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।

8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।
11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक शास्त्र

अपने मूलांक और भाग्यांक ज्ञात कर अंकों की रहस्यमय शक्ति एवं तरंगों का अनुभव अपने जीवन में करें।

अंकशास्त्र आपके वर्तमान एवं भविष्य को आपके जन्मांक एवं नाम में मौजूद अक्षरों की सहायता से बताने एवं सजाने-संवारने की कला है। प्रत्येक अक्षर का एक अंकिक मान निर्धारित है जो खास खगोलीय स्पन्दन से संबद्ध है। आपके जन्मांक में मौजूद अंक एवं नाम के अक्षरों में निहित अंकों के मान अंतसंबंधित होते हैं। इन अंकों से आपके चरित्र, जीवन के उद्देश्य, प्रेरक तत्वों एवं योग्यता का पता चलता है। इससे आपको मुहूर्त, साझेदारी, प्रेम, विवाह, स्वास्थ्य, व्यवसाय, शुभ रंग, शुभ वाहन नंबर आदि का आपके अपने अंकों के अनुकूल निर्धारण करने में सहायता मिलती है।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक दो होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक दो होता है। मूलांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। जिसके प्रभाववश आप एक कल्पनाशील, कलाप्रिय एवं स्नेहशील स्वभाव के व्यक्ति रहेंगे। आपकी कल्पनाशक्ति उच्च कोटि की रहेगी, लेकिन शारीरिक शक्ति आपकी बहुत अच्छी नहीं रहेगी। आपका बुद्धि चातुर्य काफी अच्छा होगा एवं बुद्धि विवेक के कार्यों में आप दूसरों से बाजी मार ले जायेंगे। जिस प्रकार से आपके मूलांक स्वामी चन्द्रमा का रूप एकसा नहीं रहता समयानुसार घटता-बढ़ता रहता है, उसी तरह आप भी अपने जीवन में एक विचार या योजना पर दृढ़ नहीं रहेंगे।

आपकी योजनाओं में बदलाव होता रहेगा एवं एक योजना को छोड़कर दूसरी को प्रारम्भ करने की प्रवृत्ति आपके अन्दर पाई जायेगी। धीरज एवं अध्यवसाय की आप में कमी रहेगी। इससे आपके कई कार्य समय पर पूर्ण नहीं होंगे। आत्म विश्वास की मात्रा आप के अन्दर कम रहेगी एवं स्वयं अपने ऊपर पूर्ण भरोसा नहीं रख पायेंगे, जिससे कभी-कभी आपको निराशा का सामना करना पड़ेगा।

आपकी सामाजिक स्थिति उत्तम दर्जे की रहेगी एवं मानसिक रूप से जिसे आप अपना लेंगे वैसे ही लाभ आपको प्राप्त होंगे। जनता के मध्य आप एक लोकप्रिय व्यक्ति रहेंगे, तथा स्वयं की मेहनत से अपनी सामाजिक स्थिति निर्मित करेंगे।

आपको अवस्थानुसार नेत्र, उदर, एवं मूत्र संबंधी रोगों का सामना करना पड़ेगा, मानसिक तनाव तथा शीतरोग भी परेशान करेंगे। जल से उत्पन्न रोग कफ, सर्दी-जुकाम, सिरदर्द की शिकायतें भी यदाकदा होंगी।

भाग्यांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आपकी कल्पनाशक्ति उन्नत किश्म की होगी। बौद्धिक स्तर आपका उच्च कोटि का रहेगा एवं बुद्धि जन्य कार्यों में आपकी विशेष अभिरुचि रहेगी। शारीरिक श्रम साध्य कार्यों में आपकी दिलचस्पी कम रहेगी। चन्द्रमा जिस तरह घटता-बढ़ता रहता है, उसी प्रकार आपके भाग्य का सितारा भी कभी तो एकदम ऊँचाईयों को प्राप्त करेगा और कभी आप एकदम घोर अंधकार में अपने आप को पायेंगे। ऐसे समय में धैर्य रखना आपके लिए अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि आपके भाग्य का सितारा भी पुनः पूर्णिमा की तरह प्रकाशित होगा। धैर्य न रखना आपकी कमजोरियों में रहेगा।

भाग्य आपका बदलता रहेगा। एक स्थिर मुकाम पर कभी भी नहीं पहुँचेगा। आपको सम्पूर्ण जीवन में भाग्योदय की कुछ कमी खटकती रहेगी। आपको अधिकारियों से लाभ रहेगा तथा धन-धान्य से आप सुखी रहेंगे। आपको अपनी चलायमान प्रकृति पर नियंत्रण रखना होगा अन्यथा एक के बाद एक कार्यों को बीच में छोड़कर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति वश आपके कार्य देर से सफल होंगे और कभी असफल भी होंगे।

आपका मूलांक 2 है, जो आपका भाग्यांक भी है। इसका स्वामी चंद्र ग्रह है। मूलांक एवं भाग्यांक एक ही होने से आपके अंदर चंद्रमा के गुण-अवगुणों की मात्रा द्विगुणित हो जाएगी। इसके

प्रभाववश आपकी कल्पना शक्ति अत्यधिक उच्च कोटि की रहेगी एवं बुद्धि-चातुर्य काफी विकसित रहेगा।

आपकी सामाजिक स्थिति काफी अच्छी रहेगी एवं समयानुसार आपका भाग्योदय उच्च कोटि का होगा। आपका भाग्योदय आपके बुद्धि-चातुर्य से होगा। आप ऐसे ही रोजगार-व्यवसाय का चुनाव करेंगे, जिसमें शारीरिक श्रम की अपेक्षा बुद्धि का प्रयोग अधिक होता हो। आपके भाग्योदय में थोड़ी बहुत रुकावटें अवश्य आएंगी। इसका कारण आपकी चंचल बुद्धि एवं अस्थिर चित्त का होना रहेगा। आपको चाहिए आप जो भी निर्णय करें वह काफी सोच-विचार कर करें। आर्थिक दृष्टिकोण से आप धन-धान्य एवं संपत्ति से सुखी रहेंगे। रोजगार-व्यापार में आप व्यवहार कुशल एवं बुद्धिमान कहलाएंगे।

आपका भाग्योदय 20 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा। 29 वें वर्ष पर उन्नति प्राप्त होगी तथा 38 वें वर्ष की अवस्था पर पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 2 की मित्रता 7 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 2 की मित्रता 7 एवं 9 से है। अतः आपके जीवन में 2, 7, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपका मूलांक और भाग्यांक एक ही होने से मूलांक-भाग्यांक के फलों में द्विगुणित वृद्धि होगी। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए फरवरी, जुलाई, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 2 एवं भाग्यांक 2 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 2, 7, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 2, 7, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

ग्रह फल

ग्रह फल स्पष्ट रूप से आपकी कुंडली में प्रत्येक ग्रह की भूमिका को निर्दिष्ट करता है।

इस खंड में प्रत्येक ग्रह के विभिन्न भावों/राशियों में स्थिति के अनुसार फल दिए गए हैं। यह स्पष्ट रूप से बताता है कि आपकी कुंडली में किस ग्रह का भावानुसार/राश्यानुसार क्या फल होंगे। जब आप हर ग्रह की भूमिका के बारे में जान जाएंगे तो आपको उनके वास्तविक बात को भी अंदाजा हो जाएगा। इसके अलावा आप अपने कमजोर बिंदुओं को भी जानने में सक्षम हो पाएंगे। यह सूचना आपको भविष्य की योजना बनाने में मदद करेगी तथा आप यह निर्धारित कर पाएंगे कि किस दिशा में आपका भविष्य उज्जवल है।

ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, क्रोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

आठवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकास्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र,

सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

शनि

नवम भाव मे शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरघ्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

भावफल

पूर्ण कालपुरुष 12 भावों में विभाजित है। ज्योतिष में प्रत्येक भाव जीवन के विशेष पहलू को दर्शाता है।

प्रत्येक जन्मकुंडली 12 भावों में विभाजित है तथा प्रत्येक भाव से जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य, आयुर्दाय, धन, सम्पत्ति, आजीविका, शिक्षा, आय, सामाजिक जीवन, माता-पिता, रिपु, विवाह एवं व्यय आदि के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। भाव फल में तीन महत्वपूर्ण तथ्य निहित हैं यथा- भावस्थिति, भावेश एवं भाव के कारक। इस खंड में आपको प्रत्येक भाव से संबंधित कारकत्व के फल जानने में सहायता मिलेगी। कुंडली के अनुसार निर्दिष्ट शुभ समय में अच्छे फल की प्राप्ति होती है तो दूसरी ओर अशुभ समय में जातक कष्ट, पीड़ा तथा समस्याओं का सामना करता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया मीन लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ रहते हैं। इनकी प्रवृति सरल एवं समानता की प्रतीक होती है तथा भेद भाव से ये दूर रहते हैं। सौम्यता का भाव भी इनके चेहरे से परिलक्षित होता है तथा विद्वता एवं बुद्धिमता के क्षेत्र में ये श्रेष्ठ होते हैं। नवीन विचारों का सृजन करने में ये चतुर होते हैं तथा लोग भी इनके विचारों से प्रभावित तथा सहमत रहते हैं जिससे समाज में ये आदरणीय प्रतिष्ठित एवं प्रसिद्ध होते हैं। भौतिकता के प्रति इनका पूर्ण आकर्षण रहता है तथा भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करने में समर्थ रहते हैं। साथ ही चिन्तन एवं मनन शीलता का भाव भी इनमें विद्यमान रहता है।

प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन करना इनको सुखकर प्रतीत होता है। साथ ही प्रेम के क्षेत्र में ये सरल एवं भावुकता का प्रदर्शन करते हैं। ये अत्यंत ही व्यवहार कुशल होते हैं तथा अपने सांसारिक महत्व के शुभ कार्यों को सम्पन्न करके उनमें इच्छित सफलता अर्जित करते हैं फलतः इनके उन्नति मार्ग सर्वदा प्रशस्त रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप एक स्वस्थ बलवान एवं बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे। अपनी बुद्धिमता से आप शास्त्रीय विषयों का परिश्रम पूर्वक ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में अपना वर्चस्व स्थापित करेंगे। आप एक विचारशील पुरुष होंगे तथा ब्रहम आदि के विषय में भी चिन्तनशील रहेंगे तथा भौतिक सुखों का भी उपभोग करेंगे। अतः धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर अपना समय व्यतीत करेंगे।

लग्न में बुध की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक शांति तथा सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा जिससे लोग आपसे प्रभावित होंगे। आपका आचरण अच्छा होगा तथा धन संग्रह के प्रति आपकी प्रवृति रहेगी। सांसारिक कार्यों को करने में आप दक्ष होंगे तथा इनमें आपको इच्छित सफलता प्राप्त होगी जिससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे कार्य क्षेत्र में भी आपका प्रभाव रहेगा तथा आपके अधिकारी तथा सहयोगी सन्तुष्ट होंगे। आपको घर से अन्यत्र सुख एवं उन्नति प्राप्त होगी। अतः आपको जन्म भूमि से इतर स्थान को अपना कार्य क्षेत्र में बनाना चाहिए।

पिता के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सेवा की भावना होगी तथा उनके नाम से आपको जीवन में प्रसिद्धि प्राप्त होगी। साथ ही परिवारिक सम्मान एवं उन्नति की वृद्धि में भी आपका प्रमुख योगदान रहेगा तथा अपने श्रेष्ठ कार्यों से सामाजिक सम्मान प्राप्त करेंगें। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा पत्नी के प्रति आपके मन मे तीव्र आकर्षण होगा फलतः आपके अधिकांश कार्य उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न होंगे। इसके साथ ही पुत्र संतति का भी आपको उचित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा समयानुसार धार्मिक कृत्यों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक एवं आत्मिक शांति की अनुभूति होगी। मित्र एवं बन्धुवर्ग

में आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे इच्छित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप भावनात्मक रूप से परिवार से जुड़े रहेंगे तथा उनके प्रति पूर्ण चिन्तित रहेंगे। साथ ही उनकी खुशहाली एवं प्रसन्नता के लिए यत्नपूर्वक संसाधनों को अर्जित करेंगे परन्तु यदाकदा अपनी कोई व्यक्तिगत इच्छा को आप पारिवारिक सुख से श्रेष्ठ समझेंगे तथा पहले अपनी ही इच्छा को पूर्ण करेंगे। घर की सुन्दरता एवं आकर्षण के प्रति आप हमेशा सजग रहेंगे तथा यत्न पूर्वक घर का आकर्षक रूप बनाए रखने के लिए तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा आपके मित्र भी गुणवान तथा शिक्षित होंगे।

विभिन्न प्रकार के स्वादों का आस्वादन करने के आप इच्छुक रहेंगे। साथ ही मिष्ठान एवं नमकीन के प्रति विशेष रुचि रहेगी। सामान्यतया आप सुन्दर एवं सुस्वादु एवं पौष्टिक भोजन ही करेंगे। धन के प्रति आपके मन में लालसा रहेगी तथा परिश्रम एवं यत्नपूर्वक धनार्जन करते रहेंगे। साथ ही कीमती आभूषणों या धातुओं को भी प्राप्त कर सकते हैं। आपकी वाणी भी ओजास्विता के भाव से युक्त रहेगी लेकिन यदा कदा मधुरता की न्यूनता होगी। आप घर में समय समय पर धार्मिक कार्य कलाप या अन्य प्रकार के उत्सवों का आयोजन करते रहेंगे। साथ ही आप किसी उत्सव के आयोजन को हाथ से नहीं जाने देंगे तथा अवश्य उसमें भाग लेंगे। इसके अतिरिक्त नीति के आप ज्ञाता होंगे तथा घर वाहन तथा पुत्रों से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। इसके प्रभाव से आप सतर्क, सक्रिय तथा बौद्धिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा आपकी स्मरण शक्ति भी उत्तम रहेगी एवं आसानी से किसी वस्तु को भूल नहीं पाएंगे। भाई बहिनों के सुख एवं सहयोग को प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही वे भी साहसी एवं परोपकारी होंगे एवं आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। वे महत्वाकांक्षी भी होंगे तथा आपके पूर्ण विश्वास पात्र तथा आज्ञाकारी रहेंगे। पारिवारिक शान्ति एवं परस्पर सौहार्द के भाव को रखने के लिए समय समय पर आप एक दूसरे की गलतियों की उपेक्षा करेंगे जिससे तनाव एवं मतभेदों में न्यूनता रहेगी।

आप नेतृत्व के गुणों से सम्पन्न रहेंगे तथा समाज में सभी लोग आपकी संगठन शक्ति से प्रभावित होंगे तथा आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आप स्वच्छन्द प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा दार्शनिक स्वभाव ईमानदार तथा स्पष्टवादिता आपके प्रमुख गुण रहेंगे। अतः इनके प्रभाव से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा समाज में प्रभावशाली पद को अर्जित करेंगे। आधुनिक संचार सुविधाओं का भी आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। जैसे टेलीफोन टेलीविजन वाहन या अन्य साधन आपको सर्वदा उपलब्ध रहेंगे। संगीत एवं कला के प्रति आपका विशेष लगाव रहेगा तथा समय समय पर आप इनसे मनोंरजन करके मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। जीवन में दूर समीप की यात्राओं से आप लाभ एवं ख्याति अर्जित करेंगे तथा यात्रा के मध्य आपके कई मित्र भी बनेंगे। ज्ञानवर्द्धक पुस्तकों के अध्ययन में भी आपकी रूचि रहेगी इसके अतिरिक्त आप उच्चाधिकारी वर्ग के मित्र, प्रतापी, आतिथ्य सत्कार करने वाले, दानी यशस्वी विद्धान तथा अच्छे विचारों से सर्वदा युक्त रहेंगे ।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप एक वैभव तथा ऐश्वर्य शाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपका उच्च स्तर बना रहेगा।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। आपको किसी श्रेष्ठ एवं वृद्ध व्यक्ति की भी चल अथवा अचल सम्पत्ति मिलेगी। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। आप अपनी योग्यता एवं बुद्धिमता से भी धन एवं सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त आपको अचल की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशेष लाभ होगा। अतः वांछित लाभ अर्जित करने के लिए आप चल सम्पत्ति पर निवेश कर सकते हैं।

जीवन में आपको उत्तम आवास की प्राप्ति होगी। आपका घर विशाल, सुन्दर एवं आकर्षक होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से परिपूर्ण होगा। यह भौतिक उपकरणों से भी सुसज्जित रहेगा। घर की सुन्दरता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसियों से संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तमवाहन से भी आप युक्त होंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी सुन्दर, सुशील, बुद्धिमान एवं शिक्षित महिला होंगी तथा उनका स्वभाव भी सरल होगा। कर्तव्यपरायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा अपनी व्यवहार कुशलता से वे परिवार की सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगी। सभी पारिवारिक जन उनको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी चहुंमुखी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के पूर्ण शुभचिन्तक होंगे तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक प्राप्त करके सफलताएं अर्जित करेंगे। आप स्नातक परीक्षा अच्छे अंको से उतीर्ण करेंगे। इससे आपके उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी व्यावसायिक पाठ्यक्रम में उच्चशिक्षा या डिग्री भी अर्जित कर सकते है।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र एवं निर्मल बुद्धि के स्वामी होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर स्पष्ट रूप से बुद्धिमता की छाप विद्यमान होगी जिससे अन्य सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे। आप में शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे आप समय समय पर लाभान्वित होते रहेंगे। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी अपनी तीव्र बुद्धि से शीघ्र ही करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र में आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा इनका अध्ययन करके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त आधुनिक विज्ञान राजनीति, गणित एवं ज्योतिष शास्त्र के भी आप ज्ञाता होंगे जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

पंचम भाव में कर्क राशि के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी रूचि होगी परन्तु आपका प्रेम उच्चादर्शो से युक्त होगा तथा उसमें मर्यादा, नैतिकता एवं यर्थाथवादी भाव विद्यमान होगा। इसमें भावनात्मक आकर्षण की भी प्रबलता होगी। अतः आपके प्रेम-प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है। इससे आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्रों की संख्या अधिक होगी। आपकी संतति बुद्धिमान, गुणवान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करके सम्मान जनक स्तर प्राप्त करने में समर्थ होंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञा का पालन करना वे अपना परम कर्तव्य समझेंगे। वे माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से ही शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास की भावना बनी रहेगी। माता की अपेक्षा पिता के प्रति बच्चों के मन में विशिष्ट लगाव होगा तथा उनके माध्यम से ही वे अपनी समस्याओं का समाधान करेंगे। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में तन-मन-धन से माता-पिता की सेवा करेंगे तथा उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे इससे आपको बच्चों पर गर्व की अनुभूति होगी।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारंभ से ही शिक्षा के क्षेत्र में वे विशिष्ट उपलब्धियों को अर्जित करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दिक्षा का उच्च स्तर पर प्रबन्ध करेंगे तथा आधुनिक परिवेश में शिक्षा प्रदान करेंगे। फलतः बच्चे योग्य बनकर आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करेंगे। इसके अतिरिक्त वे सुन्दर, स्वस्थ एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा अपनी व्यवहार कुशलता एवं कार्य-कलापों से अन्य सामाजिक जनो को प्रभावित करके उनसे स्नेह तथा सम्मान अर्जित करेंगे। इस प्रकार आपको जीवन में संतति का वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप रक्त सम्बन्धियों से समय समय पर विरोध का सामना करेंगे साथ ही उनसे आपको अनुकूल सहयोग भी नहीं मिलेगा। आपके उत्कृष्ट कार्य कलापों से उनके मन में ईर्ष्या की भावना उत्पन्न होगी। साथ ही यदा कदा वरिष्ठ अधिकारियों के विरोध के कारण भी आपको कार्य क्षेत्र में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपके शत्रु उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति होंगे जो समाज या सरकार के विभिन्न क्षेत्रों से रहेंगे तथा वे हमेशा आपके मान सम्मान में न्यूनता करने के लिए तत्पर रहेंगे। लेकिन आप अपनी बुद्धिमता, चतुराई शक्ति तथा अन्य गुप्त सूत्रों से उनका सामना तथा पराजित करने में सफल सिद्ध होंगे।

सेवक वर्ग की सेवा प्राप्त करने के लिए आप प्रायः उत्सुक रहेंगे तथा इनके बिना आपके कई कार्य पूर्ण भी नहीं होंगे। आपके नौकर अच्छे होंगे तथा आपकी इच्छा के अनुसार कार्य करने में वे सर्वदा तत्पर रहेंगे लेकिन वे आपके व्यक्तिगत गुप्त रहस्यों को अन्य जनों के समक्ष उजागर करेंगे। साथ ही वे यदा कदा चोरी आदि करने के लिए भी तत्पर हो सकते हैं। अतः कीमती वस्तुओं को उनकी पहुँच से बाहर रखना चाहिए। आप अपने उच्च स्तर को बनाने के लिए अनावश्यक व्यय करेंगे यह व्यय आपकी आय से अधिक होगा। यद्यपि आप सोच समझकर व्यय करेंगे परन्तु यदा कदा व्ययाधिक्य के कारण आपको ऋण भी लेना पड़ सकता है लेकिन समय पर वापस न करने में आपके मान सम्मान में न्यूनता आएगी। अतः ऋण आदि लेने की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

मामा मामियों से आपको समय समय पर इच्छित सहयोग प्राप्त होगा साथ ही आपकी वे पूर्ण रूप से सहायता करते रहेंगे परन्तु कभी कभी वे सवर्थवश आपकी मदद करेंगे जिससे आपके स्वाभिमान को ठेस पहुंचेगी। दीवानी या फौजदारी मुकद्दमों में आप सामान्यतया धन तथा समय की ही बर्बादी करेंगे। लेकिन यदि आप नियमानुसार इन कार्यो को करेंगे तो इनमें आपको इच्छित लाभ तथा विजय प्राप्त हो सकती है । साथ ही उत्तम स्वास्थ्य के खान पान का उचित ध्यान रखना चाहिए तथा गर्म पदार्थो की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए ।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है सामान्यतया सप्तम भाव में कन्या राशि के प्रभाव से जातक का सहयोगी प्रियवक्ता स्वच्छता प्रिय सौभाग्यशाली एवं विविध कार्यो में दक्ष होता है तथा वह शिक्षित विद्वान प्रसिद्ध सांसारिक कार्यो में दक्ष एवं कर्तव्य परायण होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की विनम्र एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपने संभाषण हमेशा मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगी साथ ही वह स्वच्छता प्रिय होंगी एवं सफाई के प्रति विशेष सजग होंगी सांसारिक कार्य कलापों को करने में वह चतुर होंगी। साथ ही उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी होगा एवं समाज तथा परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर आकर्षक एवं गौर वर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर के सभी अंग प्रत्यंग पुष्ट एवं सडोलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा शरीर भी आकर्षक रहेगा। साहित्य संगीत एवं कला के प्रति भी उनकी रूचि होगी तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं के संग्रह में तत्पर रहेंगी।

सप्तम भाव में कन्या राशि के प्रभाव से आपका विवाह बंधु एवं संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में एक दूसरे के प्रति सम्मान आकर्षण एवं प्रेम की भावना होगी। सांसारिक महत्व के कार्यो को आप परस्पर सलाह एवं सहमति से पूर्ण करेंगे जिससे आपस में विश्वास एवं समानता का भाव उत्पन्न होगा। इससे दाम्पत्यों संबंधों में मधुरता रहेगी तथा वैवाहिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी शिक्षित एवं प्रतिष्ठित परिवार में होगा तथा समाज में वे आदरणीय होंगे। विवाह के बाद सास ससुर से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आपको यथोचित सम्मान सहयोग एवं स्नेह मिलेगा। साथ ही आप भी उन्हें पूर्ण सम्मान देंगे एवं महत्वपूर्ण कार्यो में उनकी भी सलाह लेंगे जिससे आपस में विश्वसनीयता बनी रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का हार्दिक सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनकी माता पिता के समान सेवा करेंगी। देवर एवं ननदों को भी वह अपने सद्व्यवहार से प्रसन्न रखेंगी जिससे परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा इससे आपको वांछित लाभ होगा। यदि अपनी आयु से अधिक आयु के समीपस्थ संबंधी से साझेदारी की जाए तो इससे शुभ फल प्राप्त होंगे एवं परस्पर विश्वसनीयता भी बनी रहेगी ।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आध्यात्म तथा ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में विश्वास करेंगे। साथ ही आपकी पूर्वाभास तथा अन्तर्प्रज्ञा शक्ति भी प्रबल रहेगी जिससे आप सही रूप से भविष्यवाणियां करने में समर्थ हो सकेंगे। इस क्षेत्र में आपकी काफी रूचि रहेगी तथा प्रयत्नपूर्वक इसका ज्ञान अर्जित करेंगे एवं इसमें शोधकार्य भी सम्पन्न कर सकते हैं। इससे आपको धनार्जन भी होगा एवं समाज में आपको प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी। साथ ही इससे आपके मित्रों की संख्या में भी वृद्धि होगी तथा कई आध्यात्मिक एवं पराविद्या वेता आपके मित्र होंगे ।

आपको पैतृक सम्पत्ति की भी प्राप्ति होगी तथा इससे आपको काफी लाभ होगा। साथ ही जमीन जायदाद के कार्य से आपको समय समय पर लाभ भी होता रहेगा। आपके कार्य से लोग सामान्यतया प्रसन्न रहेंगे तथा आपको मुंह मांगा दाम देंगे। शादी से भी आपको उचित लाभ होगा तथा किसी प्रकार से जायदाद की प्राप्ति भी हो सकती है। इसमें आपको दहेज के रूप में प्रचुर मात्रा में धन आभूषण एवं अन्य आधुनिक उपकरण उपहार स्वरूप प्राप्त होंगे। इससे आप तथा आपकी पत्नी ससुराल वालों के प्रति कृतज्ञ रहेंगे। बीमे आदि से भी आपको समय समय पर लाभ होता रहेगा अतः न्यूनाधिक रूप से आपको बीमा अवश्य करवाना चाहिए। आपकी कुंडली में चोरी या दुर्घटना के कोई विशेष अवसर नहीं आएंगे। यदि कोई ऐसी घटना घट भी गई भी तो उसका मामूली प्रभाव होगा। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा उत्तम स्वास्थ से युक्त होकर आप अपना सामान्य जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से प्रारंभ में धर्म के प्रति आपके मन में कोई विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी लेकिन आयु के साथ साथ आप मन्दिर या तीर्थ स्थानों पर जाकर धार्मिक कार्य कलाप सम्पन्न करेंगे तथा दैनिक पूजा को भी आरम्भ करेंगे। भाग्य आपके लिए प्रायः सहायक रहेगा। लम्बी यात्राओं के लिए आप हमेशा रूचिशील रहेंगे तथा अध्यात्म, ज्यौतिष या तंत्र मंत्र संबंधी शास्त्रों में भी आपकी रूचि रहेगी एवं परिश्रम पूर्वक संबधित ग्रंथों का अध्ययन करके इसका ज्ञान प्राप्त करेंगे। आप अपने निवास स्थान में पूजा स्थल का भी निर्माण करवायें। परोपकार संबंधी कार्यो तथा भगवान के प्रति पूर्ण श्रद्धा रहेगी। इसके साथ ही आप कई शुभ कार्य क्रमों को सम्पन्न करेंगे तथा हमेशा प्रसन्नचित रहेंगे।

युवावस्था में आप ध्यान, योगादिक्रियाओं में भी रूचि लेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनको सम्पन्न करते रहेंगे तथा इनसे संबंधित ग्रंथों को पढ़ेंगे। आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति प्रबल रहेगी जिससे आपको पूर्वाभास या भविष्य संबंधी जानकारियां हो सकती है। आप अपने जीवन में निश्चय ही कोई धार्मिक एवं पुण्य संबधी कार्य को सम्पन्न करेंगे जैसे मंदिर अस्पताल या तालाब आदि का निर्माण। साथ ही अन्यत्र भी दानादि कार्य करते रहेंगे। प्रारंभिक अवस्था में लम्बी यात्राओं को सम्पन्न कर सकते है । ये यात्राएं शिक्षा संबंधी भी हो सकते है या व्यापारिक एवं धार्मिक कार्य संबंधी भी लेकिन इनसे आपको सम्मान लाभ एवं ख्याति अवश्य प्राप्त होगी तथा समाज में अपने सत्कर्मों के लिए जाने जाएंगे। वृद्धावस्था में पौत्रों से आपको सौभाग्य, सुख एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी तथा अपने पूर्व जन्मों के पुण्य के प्रभाव से आपका यह जीवन सुख एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है धनु राशि अग्नितत्व राशि है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान के साथ साथ श्रमसाध्य भी होगा तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही परिश्रमी स्वभाव होने के साथ आप किसी स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय में अच्छी सफलता प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र लिपिकीय कार्य, लेखाकार, लेखन, साहित्य, चित्रकारी, जिल्दसाजी, शिक्षक, ज्योतषी, पुस्तक विक्रेता सम्पादक, संशोधक, अनुवादक, संदेश वाहक तथा टेलिफोन आपरेटर आदि कार्य शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको उन्नति मार्ग सदैव प्रशस्त होंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको अपनी चहुँमुखी उन्नति एवं उज्जवल भविष्य के लिए उपरोक्त विभागों में ही अपनी अजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए एजैंसी, दलाली, पुस्तक विक्रेता या प्रकाशन कार्य, अगरबत्ती, पुष्पमालाएं, कागज के खिलौने,आदि से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित होगा। साथ ही चित्रकारी, कला आदि के स्वतंत्र व्यवसाय से भी आप लाभ एवं उन्नति प्राप्त कर सकते हैं। अतः आप व्यापार करने के इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही आपको अपने कार्य का प्रारम्भ करना चाहिए जिससे बिना किसी बाधा के आप उन्नति कर सकेगे।

जीवन में आपको मानसम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं बिद्वता से आप किसी सामाजिक पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप आदरणीय एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि होगी। आप किसी सामाजिक, सांस्कृतिक या धार्मिक संस्था में सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य भी हो सकते हैं जिससे आपके सम्मान एवं प्रभाव में वृद्धि होगी तथा जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट होंगे।

आपके पिता बुद्धिमान विद्वान एवं मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा समाज में उनका पूर्ण प्रभाव होगा। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा का वे यथोचित प्रबंध करेंगे तथा आपको एक योग्य व्यक्ति के रूप में देखना चाहेंगे। आपको कार्यक्षेत्र की प्रारभिक उन्नति एवं सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा। साथ ही आप भी योग्य एवं परिश्रमी व्यक्ति होंगे तथा अपने पराक्रम से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबंधो में भी मधुरता होगी तथाा वैचारिक एवं सैद्धांतिक समानता बनी रहेगी इसके अतिरिक्त आप में आज्ञाकारिकता का भाव भी होगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आपसी सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप किसी भी कार्य को सोच समझकर तथा व्यापारिक दृष्टि से सम्पन्न करेंगे। साथ ही मानसिक शक्ति की भी आप में प्रबलता रहेगी। प्रबन्ध एवं संगठन शक्ति भी आप में विद्यमान रहेगी तथा एक पराक्रमी परिश्रमी तथा योग्य व्यक्ति होंगे अतः जीवन में अपनी अधिकांश इच्छाओं तथा आकांक्षाओं को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। आप एक दूरदर्शी एवं महत्वाकांक्षी पुरूष भी होंगे तथा प्रसिद्ध धन-ऐश्वर्य एवं मान सम्मान अर्जित करने के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगे । जीवन में उन्नति या लाभार्जन का आप कोई भी अवसर नहीं छोड़ेगे फलतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेंगी तथा आय स्रोतों में नित्य वृद्धि होगी जिससे प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता रहेगा। आर्थिक क्षेत्र में आप किसी भी प्रकार का खतरा नहीं उठाएंगे। लकड़ी या लोहे से संबंधित व्यापार या कार्य से आप विशिष्ट लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

आपको बड़े भाइयों की अपेक्षा बहिनों से जीवन में विशिष्ट लाभ सहयोग एवं स्नेह प्राप्त होगा तथा वे आपका पुत्रवत पालन करेंगी तथा समय समय पर मार्ग दर्शन भी करती रहेंगी। आपकी मित्रता स्थाई रहेगी तथा मित्रता का क्षेत्र अधिक विस्तृत नहीं होगा परन्तु मित्रवर्ग के मध्य आदरणीय विश्वसनीय तथा प्रतिष्ठा से युक्त रहेंगे। समाज में आपका स्तर उच्च रहेगा तथा सभी सामाजिक जनों से आपके अच्छे संबंध रहेंगे एवं उनकी सेवा तथा भलाई करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। अतः अपने क्षेत्र या समाज में आपको अच्छी ख्याति प्राप्त होगी लेकिन यदा कदा बाएं कान संबंधी परेशानी से आप कष्ट की अनुभूति कर सकते है परन्तु आपका सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपकी अच्छी व्यापारिक क्षमता रहेगी तथा धन एवं शक्ति से हमेशा युक्त रहेंगे। वृद्धावस्था में आप अपने बच्चो या किसी अन्य संबंधी पर आश्रित नहीं रहेंगे क्योंकि पहले से ही इस समय के लिए पूर्ण धन सुरक्षित रखेंगे। अन्य जनों के प्रति आपके मन में सहानुभूति रहेगी तथा यत्नपूर्वक उनकी आर्थिक तथा अन्य रूप से सहायता करते रहेंगे।

आपको मध्यमवस्था में पूर्ण धन मान एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा धन का आप बुद्धिमता एवं सावधानी पूर्वक उपयोग करेंगे। इस प्रकार आपकी आर्थिक स्थिति प्रायः अच्छी रहेगी। परिवार के प्रति आप पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगे तथा उनकी सुख सुविधा रहन सहन एवं पठन पाठन का स्तर बढ़ाने के लिए नित्य यत्नशील रहेंगे तथा ऐसे कार्यो पर आपका प्रचुर मात्रा में व्यय होगा। सांसारिक सुख संसाधनों तथा भौतिक उपकरणों के प्रति भी आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी तथा इन पर भी आप प्रचुर मात्रा में श्रवयय करेंगे। साथ ही आवास संबंधी साज सज्जा पर भी उपयुक्त व्यय होगा। जिससे आर्थिक स्थिति पर इसका कोई प्रभाव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त दान या धार्मिक कार्य कलापों पर भी समय समय पर आपका व्यय होता रहेगा।

यात्राओं के प्रति भी आपकी रूचि बनी रहेगी तथा समय समय पर व्यवसाय या कार्य संबंधी याात्राएं होगी जिससे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त व्यापारिक तथा भ्रमण संबधी आपकी जीवन में विदेश यात्रा की भी संभावना रहेगी।

वार्षिक फलादेश

वार्षिक फलादेश गोचर पर आधारित हैं जिसमें शनि, राहु एवं बृहस्पति के गोचर से आपकी जन्मकुंडली का कोई अंश ऊर्जावान होता है जिसके प्रभाव से आपके जीवन में आने वाले वर्ष के घटनाक्रम की जानकारी प्राप्त होती है।

वार्षिक फलादेश से उस वर्ष जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पड़ने वाले प्रभावों जैसे स्वास्थ्य, परिवार, संपत्ति, धन, आजीविका, व्यवसाय, शिखा, यात्रा एवं स्थानांरण आदि का विवरण विस्तृत रूप में उपाय सहित दिया गया है। वार्षिक फलादेश मुख्य ग्रहों के गोचर पर आधारित है।

इस वर्ष शनि धनु राशि में दसवें भाव में 26 जनवरी को प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में राहु सिंह राशि में छठे भाव में और गुरु कन्या राशि में सप्तम भाव में रहेंगे। 09 सितंबर को राहु कर्क में पाचवें भाव में और 12 सितंबर को गुरु तुला राशि में अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल इस वर्ष सरल गति से गोचर करेंगे। 21 मार्च से 25 मार्च तक शुक्र अस्त रहेंगे और 14 दिसंबर के बाद फिर से अस्त हो जायेंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक व्यक्तियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अनुकूल रहेगा अतः आप अपने भाग्य एवं कर्म के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे। सप्तमस्थ गुरु व्यापार में उन्नति का प्रबल योग बना रहे हैं। जिससे व्यापारिक व्यक्तियों को मनोवांछित लाभ की प्राप्ति होगी। नौकरी पेशा करने वाले व्यक्तियों का स्थानांतरण होगा। यह परिवर्तन उनके अनुकूल स्थान पर होगा। 12 सितंबर के बाद समय थोड़ा प्रतिकूल होगा उस समय यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो आप अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे। अतः आप अपने बौद्धिक शक्ति के अनुसार निर्णय लें नहीं तो परेशानी और बढ़ सकती है।

धन संपत्ति

वर्ष का पूर्वार्द्ध आर्थिक स्थिति के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। धनागम में रूकावट की स्थिति बनी रहेगी जिससे इच्छित धन की प्राप्ति नहीं कर पाएंगे। माता-पिता का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनके इलाज में भी धन व्यय हो सकता है। निवेश के मामले में सावधान रहना जरूरी होगा। जोखिम भरे कामों में धन निवेश न करें। 12 सितंबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर आर्थिक मामलों के लिए अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धीरे-धीरे आर्थिक स्थिति को मजबूत करेगी। यदि इस समय कोई नया व्यापार करेंगे तो इसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और आपके अंदर परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपको धनार्जन में सहायता मिलेगी।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से पत्नी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। भाई बहनों का भी सहयोग प्राप्त होगा। अविवाहित व्यक्तियों का विवाह होने के प्रबल योग बन रहा है। आपके परिवार में नये सदस्य का बढ़ोत्तरी होने की संभावना बन रही है। चतुर्थ एवं दशम स्थान शनि से पीड़ित होने के कारण माता-पिता के सुख में कमी हो सकती है या उनसे दूर जाकर रहना पड़ सकता है। इस समय आपको किसी पर विश्वास नहीं करना चाहिए नहीं तो आपके इष्ट मित्र भी अपने वादों से मुकर सकते हैं। जिससे उनके साथ आपका मानसिक मतभेद हो सकता हैं।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध संतान के लिए अच्छा रहेगा। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढेगी जिससे वो

अपने लक्ष्य प्राप्ति मे सफल रहेंगे। इनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी जिससे आपका भी मान सम्मान बढेगा। इन सब के बावजुद भी आपकी चिंताएं बनी रहेगी। 9 सितम्बर के बाद राहु का गोचर पंचम स्थान में होगा। उस समय आपको संतान संबंधित चिंताएं आ सकती हैं। संतान की उन्नति मे बाधा उत्पन्न होगी। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी आ सकती है। नवविवाहित गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात की संभावनाएं हैं। इसलिए यह समय गर्भाधान के लिए शुभ नहीं है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष बहुत अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि के प्रभाव से पूरा वर्ष आपकी सेहत के लिए उत्तम होगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं अथवा मौसम जनित बीमारियों से आपको परेशानी होती है तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जायेगी। यदि पहले से कोई लंबी बीमारी भुगत रहे हैं तो इस वर्ष उससे भी मुक्ति मिल सकता है। 12 सितंबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए अनुकूल नहीं होने के कारण पेट संबंधीत परेशानी उत्पन्न होने की उम्मीद है। इसलिए उस समय आपको अपने सेहत के प्रति विशेष ध्यान देने की जरूरत है। यदि आप अपने खानपान पर ध्यान देंगे तो स्वास्थ्य संबंधी किसी प्रकार की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर के लिए बहुत उत्तम है। प्रतियोगी परीक्षार्थि परीक्षा में सफल होंगे। किसी भी प्रतियोगिता में आप इच्छित सफलता प्राप्त करेंगे। इसलिए अपने मनोबल को बनाए रखें एवं निरंतर प्रयास करें। ऐसा करने से निश्चित तौर पर सफलता आपकी कदम चूमेगी। तकनीकि शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने कार्य क्षेत्र मे विशेष उपलब्धि प्राप्त करेंगे एवं अपनी संस्था में सम्मान प्राप्त करेंगे। 9 सितम्बर के बाद समय थोड़ा प्रभावित होगा। उस समय आप का भाग्य साथ नहीं देगा। शिक्षा प्राप्ति में व्यवधान उत्पन्न होंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। व्यापारिक व्यक्तियों का व्यवसाय से संबंधित विदेश यात्राएं होती रहेंगी। नौकरी करने वालों का स्थानांतरण होगा। धार्मिक व्यक्ति धार्मिक यात्रा कर पुन्यार्जन करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अनुकूल है। यात्रा करते समय सावधानी बरतना बहुत जरूरी है नहीं तो समान चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में अध्यात्म के प्रति आपकी रुचि होगी जिससे आप पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि करते रहेंगे। विशेशतः शिव जी की पूजा के प्रति आपका ध्यान ज्यादा रहेगा। 9 सितम्बर के बाद राहु का गोचर पंचम स्थान में होगा। उसके बाद धार्मिक कार्यो में व्यवधान आ सकते हैं। आप का मन एकाग्र नहीं रहेगा जिससे आप पूजा-पाठ, यज्ञ अनुष्ठान आदि किया कम ही कर पाएंगे।

- प्रत्येक दिन अष्टगंध या केशर का तिलक करें।
- बेशन की लड्डू भगवान को भोग लगाकर गरीब लोगों में वितरण करें।

• महीने के प्रथम शनिवार के दिन लोहे का तांबा दान करें।

इस वर्ष शनि धनु राशि में दसवें भाव में और राहु कर्क राशि में पांचवें भाव में रहेंगे। गुरू तुला राशि में आठवें भाव में रहेंगे और 11 अक्तूबर के बाद वृश्चिक राशि में नौवें भाव में गोचर करेंगे। मंगल वक्री होकर 02 मई से 06 नवम्बर तक मकर राशि में ग्यारहवें भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ से लेकर 04 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे। उसके बाद फिर 16 अक्तूबर से 30 अक्तूबर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक दृष्टि से यह वर्ष ठीक-ठाक रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आप कोई नया कार्य भी कर सकते हैं। दशम स्थान का शनि व्यापार में स्थिरता व सफलता प्रदान करेगा। आप अपने परिश्रम के बल पर प्रतिष्ठा व सम्मान प्राप्त करेंगे। वर्ष भर सट्टा व शेयर मार्केट आदि के कार्यों से दूर ही रहें। नौकरी में स्थायित्व आएगा।आलस्य का त्याग करके अपने कार्य को सुनियोजित ढ़ंग से संपादित करें तथा अपने वरिष्ठ अधिकारियों व सहकर्मियों को सम्मान दें। 11 अक्तूबर के बाद समय और बेहतर होगा तथा कार्य क्षेत्र संबंधी रुकावटों का धीरे धीरे निदान होने लगेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। सट्टा कार्यों, शेयर मार्केट आदि में धन का निवेश न करें अन्यथा आर्थिक हानि उठानी पड़ सकती है। परिवार में मांगलिक कार्यों में धन खर्च हो सकता है। इस वर्ष आप अपने माता-पिता की सलाह लेकर भूमि, भवन अथवा वाहन पर धन का व्यय करेंगे या फिर नया वाहन या घर खरीदेंगे। निवेश के मामले में सतर्कता बरतें नहीं तो पैसा फंसने की सम्भावना है। आपको अपनी जोखिम उठाने की प्रवृत्ति पर पूरी तरह से अंकुश लगाकर रखना होगा अर्थात् सट्टेबाजी जैसी आदतों को सुधारना होगा। इससे धन हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष बहुत अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि एवं गुरू की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग आपको प्राप्त होगा जिससे आपको प्रसन्नता प्राप्त होगी। पंचम स्थान का राहु आपके संतान को शारीरिक कष्ट दे सकता है। अतः उनके स्वास्थ पर विशेष ध्यान देना चाहिए। गर्भपात आदि होने की संभावना है इसलिए आप सावधानी बरतें। 11 अक्तूबर के बाद आपको समाजिक प्रतिष्ठा भी प्राप्त होगा।

संतान

इसवर्ष आप संतान के मामले में अत्यधिक चिंतित रहेंगे। नवविवाहित गर्भवती महिलाओं के लिए गर्भपात के योग बनेंगे इसलिए सावधानी बरतें। पंचम का राहु संतान की तरक्की के लिए बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां भी हो सकती हैं। अतः उनके

स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इनकी शिक्षा भी प्रभावित होगी परंतु11 अक्तूबर के बाद समय कुछ अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए शुभ नहीं है। अतः इस वर्ष स्वास्थ्य से सम्बन्धित कुछ परेशानियां आ सकती हैं। पेट से सम्बन्धित पेरशानी उत्पन्न हो सकती है। आपको अपने खान-पान पर विशेष ध्यान देना चाहिए। कभी-कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभव हो सकता है। सुबह उठकर व्यायाम के साथ साथ योगाभ्यास करना भी स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा। 11 अक्तूबर के बाद आप का स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष विशेष शुभ फलदायक नहीं रहेगा। यदि आप प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं तो आपको अत्यधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। आप केवल अपने अध्ययन की ओर ही मन को लगाने का प्रयास करें। उच्च शिक्षा के अभिलाषी जातक अपनी रूचि अनुसार कार्य क्षेत्रों में सफलता अपेक्षाकृत कम ही प्राप्त कर पायेंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादश स्थान पर शनि व गुरु की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा के प्रबल योग हैं। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से सम्बन्धित विदेश यात्रा होगी। नौकरीकरने वालों का स्थानान्तरण होगा। चतुर्थ भाव पर गुरु व शनि का संयुक्त गोचरीय प्रभाव रहने से यह स्थानान्तरण उनके लिए अच्छा रहेगा। 11 अक्तूबर के बाद तीर्थयात्रा के योग प्रखर होंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष कुछ मानसिक द्वंद्वों के कारण आपका पूजा पाठ, ईश्वर भक्ति आदि में विशेष रूझान नहीं हो पाएगा। परंतु 11 अक्तूबर के बाद धर्म के प्रति आपका रूझान बढ़ेगा और आपकी धार्मिक अनुष्ठान में आनेवाली बाधाओं का निराकरण होगा।

- बृहस्पतिवार का व्रत करें तथा मास मदिरा का सेवन न करें।
- बृहस्पतिवार के दिन बेसन के लड्डू मन्दिर के सामने भिक्षुओं को खिलाएं।
- 12 केले अपने सिर से सात बार वार कर पीपल के वृक्ष के नीचे रख दें या गरीबों में बांट दें।

इस वर्ष शनि धनु राशि में दशम भाव में रहेंगे। 23 मार्च को राहु मिथुन राशि में चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 29 मार्च को गुरु धनु राशि में दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 23 अप्रैल को वृश्चिक राशि में नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 05 नवम्बर को धनु राशि में दशम भाव में आजाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष स्थिरता, सन्तुलन तथा स्थायित्व लेकर आ रहा है। एक व्यवसायी के रूप में आपकी विश्वसनीयता बढ़ेगी। आप अपने भाग्य एवं कर्म में उन्नति करेंगे।

नौकरी वालों को सम्मान, उन्नति व स्थानान्तरण होगा। जमीन-जायदाद के मामलों में सावधानी से कार्य करें नहीं तो हानि उठानी पड़ सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिसे यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। व्यवसायिक जीवन की स्थिरता आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करेगी। धनागम का योग बना रहेगा परंतु अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों में मांगलिक कार्यों में धन का खर्च भी होगा।

इस वर्ष अचानक सम्पत्ति जैसे भवन, भूमि, वाहन इत्यादि प्राप्ति के योग हैं। वर्षारम्भ में आप नये कार्यालय के भवन निर्माण हेतु योजना बनाएंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। परिवार में बड़े सदस्यों का सहयोग आपको प्राप्त होगा और परिवार के प्रति आप का भी आकर्षण बढ़ेगा।

संतान का स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको समाजिक पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। मां के स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहना होगा।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में आप संतान के मामले में अधिक चिंतित रहेंगे परंतु 23 मार्च के बाद संतान की तरक्की के योग बनने पर आपको शांति व सुकून की प्राप्ति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे।

संतान के विवाह योग्य होने की स्थिति में विवाह के लिए भी श्रेष्ठ समय है। द्वितीय संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। खाने-पीने की वस्तुओं में परहेज रखें। स्वास्थ्य में छोटी मोटी समस्याएं रहेंगी परंतु कार्य क्षमता बनी रहेगी। मानसिक तनाव से बचें व व्यवहारिक होकर अपनी समस्याओं का निराकरण करें।

मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आप योग, ध्यान आदि क्रियाओं में रुचि लेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः प्रतिकूल रहेगा। पढ़ाई में भी अरुचि पैदा होने की संभावना है। प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफल होने की संभावनाएं बहुत कम हैं।

गुरु का गोचर अनुकूल होने से भाग्य साथ देगा, अधिकारियों से सहायता प्राप्त होगी, नौकरी करने वाले के लिए समय सामान्य है। उच्च शिक्षा प्राप्ति के योग हैं।

यात्रा-तबादला

विदेश यात्रा का प्रबल योग बना रहा है। इन यात्राओं से भाग्योन्नति भी होगी। तीर्थ यात्राएं भी होंगी।

जन्म भूमि से दूर जाना पड़ सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आप कोई विशेष पूजा अनुष्ठान करेंगे जैसे अखण्ड रामायण का पाठ, माता की चौकी, माता का जागरण या अन्य कोई हवन इत्यादि संपन्न करेंगे। जिससे आपको समाज में ख्याति प्राप्त होगी, और आप मानसिक रूप से संतुष्ठ रहेंगे।

- प्रत्येक दिन सुबह सूर्य को जल दें। (तांबे के लोटे में चावल, रोली एवं लाल पुष्प डालकर)
- गरीब लोगों को भोजन कराएं या तला हुआ वस्तु भिक्षुओं के मध्य वितरित करें।
- राहु के मन्त्र का पाठ करे। राहु मन्त्र (ओम् भ्रां भ्रीं भ्रौं स राहवे नमः)

इस वर्ष शनि 24 जनवरी को मकर राशि में एकादश भाव में प्रवेश रहेंगे। वर्ष के प्रारम्भ में राहु मिथुन में चतुर्थ भाव में होंगे और 19 सितम्बर के बाद वृष राशि में तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 30 मार्च को गुरु मकर राशि में एकादश भाव में प्रवेश करेंगे एवं वक्री होकर 30 जून को धनु राशि में दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 20 नवम्बर को मकर राशि में एकादश भाव में आजाएंगे। 31 मई से 8 जुन तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठतम रहेगा। कार्य में सफलता प्राप्ति होगी और आप अपने भाग्य एवं कर्म के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आप अपने व्यापार का विस्तार करने में सफल होंगे।

आप अपने शत्रुओं तथा प्रतिद्वन्दियों का हनन करने में सफल होंगे। वर्षारम्भ में दशम स्थान का गुरु, नौकरी करने वालों की पदोन्नति करा सकते हैं। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अपेक्षाकृत कम लाभ प्राप्त होगा। जो व्यक्ति अपना काम करते हैं उनको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। सट्टा व शेयर मार्केट से लाभ के योग मार्च से जून के मध्य बनेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष विशेष लाभ दायक रहेगा। आय स्थान का शनि धनागम में निरन्तरता बनाए रखेंगे। फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे उसमें भी आप धन व्यय करेंगे।

उत्साह एवं पराक्रम के साथ अपने आर्थिक स्थिति को बढ़ाने में तत्पर रहेंगे। इस वर्ष वाहन के क्रय, भवन निर्माण कार्य या घर में विवाह आदि पर धन का व्यय होगा। निवेश के लिए भी यह समय अनुकूल है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में दूसरे भाव पर गुरु की दृष्टि से परिवार में शांतिपूर्ण वातावरण रहेगा। आपको पारिवारिक माहौल से सहारा मिलेगा। 30 जून के बाद परिवार में नये सदस्यों की बढ़ोत्तरी होगी। यह बढोत्तरी विवाह या जन्म के माध्यम से हो सकता है। परिवार के विरोधी दूर होंगे एवं परिवार के लोगों का व्यवहार आपके प्रति बहुत अच्छा हो जायेगा।

19 सितम्बर को राहु ग्रह का गोचर तृतीय स्थान में होगा। उस समय आप परोपकारी व जन कल्याण तथा सेवा कार्यों में संलग्न रहेंगे। ऐसा करने से आपके मान-सम्मान व पुण्य की वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप के बच्चों की शिक्षा व उन्नति का मार्ग खुला हुआ है।

30 मार्च से जून पर्यंत पंचम स्थान पर शनि एवं गुरू के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति के सुंदर योग बन रहे हैं। यह समय गर्भाधान के लिए उपयुक्त मुहूर्त है। यदि आपकी प्रथम संतान विवाह योग्य है तो उसका विवाह संस्कार हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे। यदि पहले से कोई बीमारी नहीं है तो यह वर्ष अच्छा रहेगा। कभी-कभी मौसम जनित बीमारियों से परेशान हो रहे हैं तो जल्दी ही आप अच्छे हो जाएंगे।

आप स्वास्थ्य लाभ व आरोग्यता के लिए शाकाहारी भोजन करेंगे एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम आदि सीखने में रुचि लेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर के लिए अच्छा रहेगा, षष्ट स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए अच्छा योग बन रहा है। आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे।

बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की प्रबल संभावना है। 30 मार्च से जून पर्यन्त पंचम स्थान पर शनि एवं गुरू की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थीगण अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उच्च शिक्षा के लिए मनोनुकूल संस्थान मे प्रवेश मिल जाएगा।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष अधिक यात्राएं नहीं होंगी परन्तु व्यावसायिक जीवन में विस्तार व उन्नति के उद्देश्य से की जाने वाली सभी यात्राएं लाभ व आनन्दकारी रहेंगी।

नौकरी करने वालो का स्थानान्तरण होगा। 19 सितम्बर के बाद अधिक यात्राओं के योग बनेंगे व परिवार के साथ किसी पर्यटन स्थल की यात्रा अवश्य होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। आपका मन एकाग्र रहेगा जिससे योग ध्यान इत्यादि क्रिया करते रहेंगे। आप पुण्य के कार्यों से अपनी कीर्ति का विस्तार करेंगे।

- अपने कार्य स्थल पर व्यापार वृद्धि यन्त्र व घर पर गायत्री यन्त्र स्थापित करें एवं नित्य पूजन करें।
- राहु मन्त्र का पाठ करें या शनि वार के दिन नीली वस्तु का दान करें।

इस वर्ष शनि मकर राशि में एकादश भाव में और राहु वृष राशि में तृतीय भाव में रहेंगे। 6 अप्रैल को गुरू कुम्भ राशि में द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 सितम्बर को मकर राशि में एकादश भाव में गोचर करेंगे और मार्गी होकर फिर से 20 नवम्बर को कुम्भ राशि में द्वादश भाव में आजाएंगे। मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 17 फरवरी से 19 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष पूर्ण फलदायक रहेगा। वर्ष के शुरुआत में सप्तम स्थान पर गुरू की दृष्टि व्यापार में उन्नति के योग बना रही है। यदि आप कुछ नया करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। जिससे आपके कार्यों में सफलता की मात्रा और बढ जाएगा। आप अपने व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त करेंगे। व्यापार में आपके बाईयो का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

6 अप्रैल से 14 सितम्बर तक गुरू ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस समय बाहरी सम्बन्धों से लाभ के योग हैं। इस अवधि में स्थानान्तरण के योग हैं। सितम्बर के बाद और अधिक अनुकूल हो जाएगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। एकादश स्थान में गुरू एवं शनि की युति प्रभाव से धनागम में निरंतरता बना रहेगा। जिससे आप इच्छित बचत करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सफल रहेंगे।

6 अप्रैल के बाद गुरू ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस सयम धन का अनावश्यक व्यय होगा।आपपरिवार में मांगलिक कार्य पर धन का व्यय करेंगे। 14 सितम्बर के बाद आपके रूके हुए पैसे मिल सकते हैं और अकस्मात् धन लाभ भी हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। अधिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। परन्तु आपका पारिवारिक माहौल अनुकूल रहेगा। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 6 अप्रैल से 14 सितम्बर के मध्य आपका पारिवारिक माहौल थोड़ा प्रभावित हो सकता है। परन्तु सितम्बर के बाद बहुत अच्छा हो जाएगा।

तृतीय स्थान का राहु आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि करेगा। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरू एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति के प्रबल योग बन रहे हैं।

आपके बच्चे की शिक्षा में सुधार होगा। यदि आपकी दूसरी सन्तान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह संस्कार हो जाएगा। 6 अप्रैल से 14 सितम्बर तक समय थोड़ा प्रतिकूल होगा परन्तु सितम्बर के बाद फिर सेअनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। यदि पहले से कोई बीमारी नहीं है तो वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्यबर्धक रहेगा।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पानएवं दिनचर्या भी सही रखेंगे। मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएंगे। 6 अप्रैल से 14 सितम्बर तक द्वादश स्थान स्थित गुरु आपके स्वास्थ्य को थोड़ा प्रभावित कर सकते हैं। परन्तु सितम्बर के बाद फिर से अनुकूल हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरू की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षण संस्थान में प्रवेश पाना सम्भव है।

जिन जातको की नौकरी अभी नही लगी है उन लोगो को 14 सितम्बर के बाद नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। 6 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान का गुरू आप को विदेश यात्रा करा सकते है। मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण के योग भी हैं।

तृतीय स्थान का राहु छोटी यात्रा कराता रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ केतु के प्रभाव से आपका मन तन्त्र-मन्त्र आदि क्रियाओं की ओर आकर्षित होगा।

- प्रत्येक दिन सूर्य को अर्घ्य दें।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें और वृहस्पतिवार का व्रत रखें।

• विष्णुसहस्त्रनाम का पाठ करें एवं अपने घर में लड्डू गोपाल की मुर्ति स्थापित करें।

दशा विश्लेषण

दशा विश्लेषण घटना के समय निर्धारण में दशा स्वामी की भूमिका के विषय में बताता है। कुंडली में दशा स्वामी की स्थिति के अनुसार फलादेश से अवगत कराता है। साथ ही दशाकाल में किस से सतर्क रहें व क्या उपाय करें इसका ज्ञान कराता है।

अच्छे या बुरे दशा के प्रभाव स्वरूप प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में समय-समय पर खट्टा-मीठा अनुभव होता रहता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की जन्मकुंडली में शुभ एवं अशुभ योग होते हैं। यदि अच्छे ग्रह की दशा चलती है तो जीवन में शुभ घटनाएं घटित होती हैं तथा आप सफलता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचते हैं। दूसरी ओर यदि बुरे ग्रह की दशा चलती है तो आपके समक्ष समस्याएं, बाधा, कष्ट, पीड़ा आदि उपस्थित होते हैं।

दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(07/06/2010 - 07/06/2027)

बुध की महादशा 07/06/2010 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 07/06/2027 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध लग्न में स्थित है। बुध की दृष्टि सप्तम भाव पर है। इसके पहले आपकी 19 वर्ष की शनि की दशा चल रही थी। उस दशा के दौरान आपको समृद्धि की प्राप्ति, जीवन वृत्ति में प्रगति तथा यात्रा हुई होगी। बुध की इस दशा के दौरान जीवन का सुख, माता से लाभ, सुखमय वैवाहिक जीवन तथा जीवन में प्रगति होगी।

स्वास्थ्य :

बुध के अपनी ही राशि में होने के कारण आपको उत्तम स्वास्थ्य तथा जीवनी शक्ति की प्राप्ति होगी। आप में शक्ति तथा उत्साह होगा तथा आप अशावादी और प्रसन्न होंगे। आपका व्यक्तित्व व रंगरूप आकर्षक होगा। अधिक परिश्रम तथा थकावट के कारण कोई संक्रामक बीमारी, बुखार अथवा स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारी हो सकती है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आप स्वयं धनोपार्जन करेंगे। आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। जीविका तथा व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, वैभानिकी तथा मस्तिष्क से संबद्ध सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर और हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को अचानक लाभ होगा, कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और उच्च पद तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। आपको उच्चाधिकारियों का सद्भाव तथा अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपको कठिन परिश्रम करना होगा। व्यापारी वाणिज्य व्यापार में कुशल होंगे और उन्हें अच्छा लाभ मिलेगा। आर्थिक-समृद्धि तथा जीवन-वृत्ति में उन्नति के लिये यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में जीवन तथा वाहन का सुख मिलेगा। बुध की दशा के दौरान आपको सभी सुख, माता से लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और आपकी जमीन-जायदाद में भी वृद्धि होगी। सम्पत्ति के सभी लेन-देन लाभदायक होंगे। सूर्य की अन्तर्दशा में छोटी तथा शुक्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्राएं होंगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपनी परीक्षा में सफल होंगे। आप विज्ञान, गणित तथा व्यापार में प्रवीण होंगे। आप तेज हैं और अपनी वाक्पटुता के कारण जाने जाएंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा ललितकला में भी आपकी रुची होगी। आप तेज, कूटनीतिज्ञ, व्यवहार कुशल, सर्वतोमुखी हैं और विविध विषयों में रुचि रखते हैं।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। आपके बच्चे बहुत अच्छा करेंगे और उन्हें समृद्धि की प्राप्ति होगी, उनकी शिक्षा उत्तम होगी और वे उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे। उनके साथ आपका संबंध बहुत सुन्दर रहेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा होगी और उन्हें सम्पत्ति तथा साझेदारी में लाभ की प्राप्ति होगी। जीवनसाथी के साथ आपका संबंध अत्यना मधुर रहेगा। आपकी माता का जीवन अत्यन्त सफल रहेगा और उन्हें सम्पत्ति, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके पिता का सट्टे तथा ऊँचे कारोबार में निवेश सफल रहेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को विभिन्न स्रोतों से लाभ, उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति तथा उनके मित्र प्रभावशाली होंगे। आपके बड़े भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और उन्हें सम्पत्ति तथा माता से लाभ की प्राप्ति होगी। उनके साथ आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर होंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की मुख्य दशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और आपको सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी। आगे केतु की अन्तर्दशा आपके लिए कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। शुक्र के कारण आपको बच्चों से सुख तथा सट्टे में लाभ मिलेगा। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्राएं होंगी जबकि उसके बाद आनेवाली चन्द्रदशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में लाभ तथा विरोधियों पर विजय मिलेगी जबकि राहु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु के फलस्वरूप आपको साझेदारों से लाभ तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान कुछ परिवर्तन होगा और धन तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

अंर्तदशा :- बुध - सूर्य
(31/08/2016 - 07/07/2017)

आपके लिए बुध की महादशा 07/06/2010 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चौथी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 31/08/2016 को प्रारंभ होकर 07/07/2017 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य स्वास्थ्य, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप अध्यात्म और दर्शन में रुचि लेंगे। स्पर्धी आपको परेशान करने की कोशिश करेंगे मगर आप विजयी रहेंगे। कार्यक्षेत्र में बाधाएं आ सकती हैं। विदेश यात्रा हो सकती है। शत्रु परास्त होंगे; उत्तम स्वास्थ्य, धन, उच्च पद, प्रसन्नता, सफलता और लाभ का संकेत है। मुकदमे में जीत होगी। मातहत सहयोग करेंगे; कार्यालय में सुविधाएं उत्तम होंगी।

आपके जीवनसाथी को धन, उच्चपद, विरोधियों पर विजय का संकेत है। आपके पिता के लिए अचल संपत्ति, सरकार से लाभ और सब सुखों का योग है। माता को अध्यात्म में रुचि होगी, भाग्य साथ देगा, यात्रा होगी।

आपके भाई-बहनों की साख अच्छी होगी, कार्यक्षेत्र में सफलता, उच्चपद, धनलाभ, उत्तम शिक्षा और खुशी का संकेत है। आपकी संतान के वातावरण में परिवर्तन हो सकता है, शिक्षा पूर्ण होगी। अगर वे सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो सामूहिक प्रयास से सफल हो सकते हैं। परामर्शदाता प्रगति करेंगे। व्यापारियों को लाभ होगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- बुध - चन्द्र
(07/07/2017 - 06/12/2018)

आपकी बुध की महादशा 07/06/2010 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी, जिसकी अवधि 1 वर्ष 5 मास होगी। आपके लिए यह 07/07/2017 को प्रारंभ होकर 06/12/2018 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, सरकारी कृपा और चेहरे की चमक का कारक है।

इस अवधि में अचानक अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। आप की अंतर्ज्ञान शक्ति प्रबल है। पराविद्या आदि में रुचि हो सकती है। आपकी माता सौभाग्यशाली रहेंगी। साझेदारों से लाभ हो सकता है। धनागम उत्तम होगा। आपकी मधुरवाणी से सब प्रभावित होंगे, लोकप्रियता और समाज में सफलता प्राप्त होंगी। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा।

आपके जीवनसाथी को सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे, धनार्जन होगा, घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आपके पिता के खर्चे बढ़ेंगे; यात्राएं होंगी। माता को निवेश से लाभ होगा, कला में रुचि होगी।

आपके भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मातहतों से संबंध उत्तम होंगे, मामापक्ष से

लाभ होगा, शिक्षा उत्तम रहेगी, सफल और प्रसिद्ध बनेंगे। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी ; भविष्य के लिए नींव मजबूत होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं; स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो लघु यात्राएं होंगी; संचार साधनों से लाभ होगा। परामर्शदाताओं की आय में वृद्धि होगी। व्यापारियों को धन का लाभ होगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर होगा। श्वसनतंत्र के रोग और गठिया आदि से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए भैरव मंदिर में दूध अर्पित करें।

अंर्तदशा :- बुध - मंगल
(06/12/2018 - 04/12/2019)

आपके लिए बुध की महादशा 07/06/2010 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। यह 06/12/2018 को प्रारंभ होकर 04/12/2019 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास का कारक है।

आपकी महत्वाकांक्षाएं पूर्ण होंगी। सौभाग्यशाली रहेंगे। ज्ञान-विज्ञान के कार्यों में रुचि होगी। लंबी यात्रा हो सकती है। विविध गतिविधियों में सक्रिय रहेंगे। भाई-बहनों से संबंध उत्तम रहेंगे। स्वास्थ्य और रोग प्रतिरोधक क्षमता उत्तम रहेंगे। स्पर्धियों पर विजय होगी। धन के संचय में कुछ कठिनाई हो सकती है। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। जायदाद से आय में वृद्धि होगी। आपके जीवनसाथी को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके पिता के आत्मविश्वास, ऊर्जा और कार्यक्षमता उत्तम होंगे। माता के लिए स्पर्धा में सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, सफलता और उच्चपद का संकेत है।

आपके भाई-बहनों को साझेदारी से लाभ होगा; व्यापार में लाभ, धन, सफलता, निवेश से लाभ का योग है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, तकनीकी विषयों में सफल हो सकते हैं। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा, उच्च पद मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भूतकाल की साख से लाभ होगा, आय में वृद्धि होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारी स्पर्धा में सफल रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पैरों में मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल वस्त्र, लाल दाल और लाल चंदन दान में दें।

अंर्तदशा :- बुध - राहु
(04/12/2019 - 22/06/2022)

आपके लिए बुध की महादशा 07/06/2010 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 04/12/2019 को प्रारंभ होकर 22/06/2022 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है। भौतिक सुख-साधन उपलब्ध होंगे। प्रभावशाली व्यक्तियों से संपर्क होगा, उनसे सहायता मिलेगी। समृद्धि का वातावरण रहेगा। कटु वचन बोलने से बचें। साझेदार के माध्यम से धनागम हो सकता है। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है, यात्रा संभव है। अचानक, अप्रत्याशित घटना घट सकती है।

आपके जीवनसाथी को साझेदार के माध्यम से या यात्राओं से लाभ हो सकता है। आपके पिता स्पर्धियों पर विजय प्राप्त करेंगे, सम्मान बढ़ेगा, धनागम होगा और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए विदेश में निवास, अचल संपत्ति की प्राप्ति, उत्तम शिक्षा और माता से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान का ज्ञानार्जन उत्तम होगा, प्रसिद्ध बनेंगे और परीक्षा में सफल होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे, प्रसिद्ध होंगे, धन का लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रसिद्ध होंगे, आय में वृद्धि होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता स्पर्धियों पर विजयी होंगे। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ॐ रां राहवे नमः